पंजीयन संख्या-69904/98
www.thearyasamaj.org
डाक पंजीयन संख्या-एसएसपी/एल०डब्लू०/एन०पी०/318/2011-13

ओ३म्

ऋण्वन्तुविश्वे अमृतस्य पुत्राः

# आर्य्य लोक वार्ता

लखनऊ से प्रकाशित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक

वर्ष-१६, अंकः-२-३, अगस्त-सितम्बर, सन्-२०१३, सं०-२०७० वि०, दयानंदाब्द १६०, सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११४; मूल्य : एक प्रति ५.००रु., वार्षिक सहयोग १००.०० रुपये

हिन्दी दिवस पर विशेष

## स्वामी दयानन्द ने १९वीं शताब्दी में ही यह समझ लिया था- हिन्दी ही होगी देश की राजभाषा

### जीवन के अंतिम क्षण तक उसके प्रचार-प्रसार के लिए अनथक प्रयत्नरत रहे

-आचार्य विष्णु प्रभाकर-

डॉ. राममनोहर लोहिया ने एक बार इन पंक्तियों के लेखक से कहा था कि किसी भी देश पर मध्यप्रदेश का शासन होता है, सीमान्त प्रदेशों का नहीं। भारत के मध्यप्रदेशों की भाषा हिन्दी है। वही देश की राजभाषा होगी। इसी बात को पिछली शताब्दी में स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने समझ लिया था और इसीलिए मध्य देश की भाषा (हिन्दी) के प्रचार को मुख्य सुधार की नींव समझकर उसे राजभाषा का स्थान दिलाने के लिए सरकार द्वारा नियुक्त हंटर कमीशन के पास हिन्दी के पक्ष में स्थान-स्थान से स्मरण-पत्र भिजवाये।

उन्होंने उस समय के राजाओं को प्रेरित किया कि वे अपने राज्य का काम-काज सरल हिन्दी में चलावें। उनकी सलाह पर उदयपुर के महाराजा ने साधारण लोगों की समझ में आने वाली सरल हिन्दी को राजभाषा बनाया और नागरीलिपि को स्वीकार किया। राजकीय कार्यालयों के नाम संस्कृत शैली के अनुसार रखे जैसे महद्राज सभा, शैलकान्तार सम्बन्धिनी सभा, निज सैन्य सभा, शिल्प सभा आदि।

स्वामी जी ने जोधपुर नरेश को भी राजकुमारों को पहले देवनागरी भाषा, फिर संस्कृत और उसके बाद (समय हो तो) अंग्रेजी पढ़ाने की सलाह दी थी। एक बार हिन्दी को देश की एकता की भाषा स्वीकर कर लेने पर उन्होंने जीवन के अंतिम क्षण तक उसके प्रचार और प्रसार के लिए अनथक प्रयत्न किये और किसी दूसरी भाषा के प्रति द्वेष रखे बिना किये।

उन्होंने श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा को वेदभाष्य के डाक पार्सलों पर देवनागरी में पते लिखने की प्रेरणा दी। उन्होंने महाराष्ट्र के स्वनामधन्य सुधारक श्री गोपाल हरिदेशमुख को आर्यभाषा के प्रचार में अपना पुरुषार्थ प्रगट करने को लिखा। उन्हीं की प्रेरणा पर कर्नल आलकाट ने नागरी पढ़नी आरम्भ की। एक सज्जन ने जब उनसे उनके ग्रन्थों का उर्दू में अनुवाद करने की अनुमति चाही तो उन्होंने लिखा, "जिन्हें सचमुच मेरे भावों को जानने की इच्छा होगी वे इस आर्यभाषा को सीखना अपना कर्तव्य समझेंगे। अनुवाद तो विदेशियों के लिए होते हैं।"

इसी तरह मैडम ब्लैवट्स्की को उन्होंने लिखा था-

"भारत की आर्य जनता (अंग्रेजी के विद्यार्थी) मेरे वेद भाष्य के अंग्रेजी अनुवाद के प्रकाशित होने पर संस्कृत और हिन्दी का अध्ययन त्याग देगी। मेरे वेदभाष्य समझने के लिए संस्कृत और हिन्दी का अध्ययन, जिसको वे कर रहे हैं और जो मेरा मुख्य उद्देश्य है नष्ट हो जायेगा।"

वे आगे लिखते हैं :

"मेरा विचार आपको अनुवाद करने से रोकने का नहीं है, क्योंकि बिना अंग्रेजी अनुवाद के यूरोपियन जातियाँ सत्य के प्रकाश को नहीं पा सकतीं।"

वे तो बस यही कहते थे कि-"जो इस देश में उत्पन्न होकर अपनी भाषा (देश की भाषा) के सीखने में कुछ भी परिश्रम नहीं करता उससे और क्या आशा की जा सकती है?" अपने प्रचार कार्य के सम्बन्ध में इधर-उधर घूमते हुए उन्होंने समझ लिया था कि यद्यपि संस्कृत देववाणी है तथापि उसमें सर्व साधारण की भाषा बनने की योग्यता नहीं रह गयी है। शासकों की भाषा विदेशी भाषा है। भाषा के हर शब्द का एक वातावरण होता है और वह उस देश की संस्कृति और प्रकृति से निर्मित होता है। प्रत्येक संस्कृति की अपनी विशिष्टताएँ होती हैं और भाषा इन विशिष्टताओं की वाहक है। भाषा के बदल जाने उस संस्कृति विशेष में उथल पुथल हो जाने की पूरी सम्भावना होती है। जिस भाषा की रूपरेखा और भाव व्यंजना देश की संस्कृति से मेल नहीं खाती, वह भाषा उस देश को स्वीकार्य नहीं हो सकती। स्वामी जी के कार्य का मूल्यांकन करते समय हमें यह समझना होगा कि हिन्दी भाषा उनकी मातृभाषा नहीं थी। वे हिन्दी को लेकर भारत की राष्ट्र भाषा बनाने नहीं चले थे। इसके विपरीत राष्ट्रभाषा की आवश्यकता अनुभव करते करते हिन्दी तक जा पहुँचे थे। एक और सत्य को उन्होंने उस युग में पहचान लिया था। वे अंग्रेजी पढ़ने के विरोधी नहीं थे। लेकिन वे इस बात को जान गये थे और उन्हें इस बात का दुख था कि 'अंग्रेजी लोगों की मातृभाषा हो चली है?' इसीलिए उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश के आदि संस्करण में लिखा है-'केवल अंग्रेजी पढ़ लेने से सन्तोष कर लेना अच्छी बात नहीं है। किन्तु सब प्रकार की पुस्तक पढ़ना चाहिए।'

स्वामी जी ने परोक्ष और प्रत्यक्ष रूप से हिन्दी साहित्य के निर्माण में क्या योगदान किया और उसका हिन्दी गद्य पर क्या प्रभाव पड़ा यह जानना हमारा मुख्य उद्देश्य है। वह महत्त्वपूर्ण भी है क्योंकि इसी काल में गद्य का विकास हुआ। किसी भी भाषा में प्रारम्भिक साहित्य प्रायः पद्य में ही मिलता है। लेकिन बाद में अनेक कारणों से जिनमें व्यावहारिक आवश्यकता और राष्ट्रीयता का विकास मुख्य है, गद्य का जन्म होता है। उन्नीसवीं सदी में आजादी की ललक और धार्मिक उथल-पुथल मच उठने के कारण गद्य की आवश्यकता शिद्दत से अनुभव की जाने लगी। वाद-विवादमय प्रचार के लिए पद्य उपयुक्त साधन नहीं है। उसके लिए सरल, सहज, सशक्त और लोक प्रचलित गद्य की आवश्यकता होती है। इसी कारण संस्कतज्ञ और गुजराती होते हुए भी स्वामी जी की भाषा में शक्ति भी और सहजता भी, जैसे :

"जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। वह सत्य ही नहीं कहाता जो सत्य के स्थान में असत्य और असत्य के स्थान में सत्य का प्रकाश करे, किन्तु जो पदार्थ जैसा है उसे वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहाता है।"

परोक्ष रूप में स्वामी जी ने हिन्दी साहित्य की सेवा करने के प्रयत्न में जो साधन अपनाये उनमें सबसे प्रमुख है भाषण या व्याख्यान। जैसा कि हम कह आये हैं हिन्दी को अपनाने के बाद उनका सबसे पहला हिन्दी भाषण मई, १८७४ में काशी में हुआ था। हिन्दी भाषा में व्याख्यान देने का यह परिणाम तो अवश्य हुआ कि सर्वसाधारण अधिक संख्या में व्याख्यान सुनने आने लगे परन्तु पण्डितों की उपस्थिति कम हो गई।

स्वामी जी यही तो चाहते थे कि उनकी बात सर्वसाधारण तक पहुँचे। यद्यपि अगले दो वर्ष तक वे पूरी तरह शुद्ध हिन्दी न तो लिख ही पाये न बोल ही पाये परन्तु भाषण शैली इतनी प्रभावशाली थी कि वे जनता के अन्तरमन तक अपनी बात पहुँचाने में सफल हो जाते थे। उनकी यह शक्ति निरन्तर विकसित होती रही और शीघ्र ही वे धारा-प्रवाह शुद्ध और परिमार्जित हिन्दी में बोलने और लिखने' लगे।

उनकी भाषण शक्ति के विषय में एक बन्धु विष्णुदत्त ने देवेन्द्र नाथ मुखोपाध्याय को लिखा था :

"स्वामीजी उत्कृष्ट वक्ता थे। उनका उच्च स्वर गम्भीर और मधुर था। उनके बोलने की रीति तेजपूर्ण और उनका आक्रमण तीव्र होता था, उनकी वाणी एकदम हृदय में प्रवेश कर जाती थी इसलिए वह विरुद्ध पक्ष के लोगों को असह्य हो जाती थी और वे बीच में ही उठकर चले जाते थे।"

स्वामी श्रद्धानन्द तो उनकी भाषण कला पर मुग्ध थे। इस उद्धरण से स्पष्ट हो जाता है कि उनकी भाषण कला ने हिन्दी को परिमार्जित ही नहीं किया, उसके सही अर्थ को अभिव्यक्त करने

(शेष पृ. 3 पर.....)

(टिप्पणी : इस मंत्र का काव्यानुवाद गतांक में छप चुका है। मात्र एक अक्षर की त्रुटि हो जाने के कारण पुनः शुद्ध रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। स्वाध्यायशील कृपया यह बतायें कि वह एक अक्षर क्या था? और उस एक अक्षर से मंत्र के अर्थ पर क्या प्रभाव पड़ रहा था? -सं.)

## विनय पीयूष

## हिरण्यगर्भ प्रभु !

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

(यजु० 13/4)

हिरण्यगर्भ वह, जग से पहले विद्यमान था,
सृष्टि-सृजन, फिर रक्षण, उसका अनुष्ठान था,
रचता, धारण करता पृथ्वी, सूर्य, लोक सब,
सुखस्वरूप उस प्रभु को, अपना हवि दें हम।

*काव्यानुवाद : अमृत खरे*

## सम्पादकीय

# वैदिक ध्यान योग - सन्ध्योपासना (३)

मानव जीवन के सफल संचालन के लिए ज्ञानेन्द्रियों का कर्मेन्द्रियों पर नियंत्रण होना आवश्यक है। यदि ऐसा नहीं है तो मनुष्य का जीवन भी उस विद्यालय की तरह हो जाता है; जिसमें छात्रों पर से अध्यापकों का नियंत्रण खत्म हो जाता है। एक विचारक का कथन है-'If teachers loose the hold on the students, what will be the fate of that institution?' ऐसी दशा अराजकता से परिपूर्ण होती है। कालेजों में हड़ताल हो जाती है, महीनों शिक्षा संस्थाएँ बंद रहती हैं। ऐसे कई दृश्य अपने अध्यापकीय जीवन में मेरी आँखों के सामने गुजरे हैं। मनुष्य का जीवन भी उस समय असहज और व्यथा से परिपूर्ण और भारस्वरूप हो जाता है, जब ज्ञानेन्द्रियों का नियंत्रण मानने से कर्मेन्द्रियाँ इनकार कर देती हैं। प्राणायाम का विधान मुख्यतया ज्ञानेन्द्रियों का कर्मेन्द्रियों पर नियंत्रण कायम रखने के लिए किया जाता है।

इन्द्रिय स्पर्श तथा मार्जन मंत्रों में- सिर, नेत्र, कंठ, हृदय, नाभि और पैरों पर मध्यमा-अनामिका अँगुलियों से जल छिड़कने तथा साथ ही क्रमशः ओं भूः, ओं भुवः, ओं स्वः, ओं महः, ओं जनः, ओं तपः, ओं सत्यम् का उच्चारण करने का तात्पर्य यही है कि हमारी इन्द्रियाँ ईश्वरीय गुणों को धारण करने में समर्थ हों। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज कहते हैं- ''स्तुति से ईश्वर में प्रीति, उसके गुण, कर्म, स्वभाव से अपने गुण, कर्म, स्वभाव को सुधारना चाहिए''। 'सन्ध्या' उपासक के अन्दर ईश्वरीय गुणों के अवतरण का सुअवसर प्रदान करती है, जैसाकि एक शायर का कथन है-

खुदा करीम है, बंदे करीम क्यों न बनें,<br>
खुदा रहीम है, बंदे रहीम क्यों न बनें।

परमेश्वर प्राणदाता है, दुःखों को दूर करने वाला है, सुखस्वरूप है, महान् है, शक्तिसम्पन्न है, श्रमसाधना की ताकत उससे मिलती है, अतः भक्त कहता है- हे प्रभु! हमारा मस्तिष्क प्राणशक्ति से परिपूर्ण हो, नेत्रों से दुःखदायी दृश्य हमें न देखने पड़ें, हमारा कंठ सुखशान्ति का प्रसारक हो, हमारा हृदय उदारता व महानता से ओतप्रोत हो, हमारी नाभि ऊर्जा से समृद्ध हो, हमारे पैर श्रम साधना और तपश्चर्या में सक्षम हों। ओं भू पुनातु शिरसि, ओं भुवः पुनातु नेत्रयो, ओं स्वः पुनातु कंठे, ओं महः पुनातु हृदये, ओं जनः पुनातु नाभ्याम्, ओं तपः पुनातु पादयोः के पश्चात् 'ओं सत्यं पुनातु पुनः शिरसि' कहकर समस्त चेतना को समेट कर भक्त मस्तिष्क तक पहुँचा देता है। क्योंकि 'सत्य' मस्तिष्क में ही प्रतिष्ठित है। 'सत्य' सर्वोच्च शिखर है- ब्रह्म का सत्य में वास है- 'तत्सत्ये प्रतिष्ठितम्'- यही चरम सीमा है, चरम लक्ष्य है, चरम बिन्दु है, चरम साध्य है। इसके अनन्तर ओं भूः, ओं भुवः......ओं सत्यम्- मंत्र का जप करते हुए प्राणायाम की साधना करके साधक की समग्र चेतना 'सत्यम्' पर जब प्रतिष्ठित हो जाती है, तो उच्चतम शिखर से वह जीवन के आर पार देखने में कामयाब होता है।

इससे पूर्व कि हम अघमर्षण मंत्रों पर विचार करें, यहाँ यह बता देना उचित होगा कि संध्योपासना में प्राणायाम का विधान सामान्य क्रम में है- यह योग के आठ अंगों के अंतर्गत चतुर्थ अंग के प्राणायाम जैसा बृहद् नहीं है। संध्या में प्राणायाम- सहज शान्त बिना किसी दबाव या श्रम साधना के, मन को शान्त और निर्मल बनाये रखते हुए करना चाहिए। यहाँ प्राणायाम के मुख्य तीनों भाग पूरक, कुंभक, रेचक मौजूद हैं। प्राण (साँसों को) खींच कर भरना, स्थिर रखना फिर निकाल देना। जितना समय पूरक में, उतना ही कुंभक में तथा उतना ही रेचक में लगना चाहिए। मन में प्राणायाम मंत्र का जप करते रहना चाहिए। यदि पूरक में प्राणायाम मंत्र का एक बार जप करें, तो कुंभक और रेचक में भी एक एक बार जप करें। तीनों को बराबार समय दें, तीनों ही क्रियाएँ सहजता से सम्पन्न करें। (प्राणायाम की जो विधि ऊपर निर्दिष्ट है; उसमें स्वसुविधा या स्वविवेक के अनुसार संशोधन किया जा सकता है।)

प्राणायाम के द्वारा उच्चतम शिखर पर आरूढ़ होकर साधक जब अद्भुत, आकर्षक महान् दृश्यावली का अवलोकन करने लगता है- तो सन्ध्योपासना के द्वितीय सोपान का आरंभ होता है, जिसे 'अघमर्षण' कहा जाता है। 'अघमर्षण' में तीन मंत्र सन्निविष्ट हैं।

(१) ऋतं च सत्यं (२) समुद्रादर्ण (३) सूर्याचन्द्रमसौ- इन तीनों मंत्रों में सृष्टि रचना के क्रम तथा सृष्टि के सौन्दर्य के अवलोकन द्वारा मनुष्य के अन्तःकरण को प्रभु-भक्ति के अटूट विश्वास से भरने का तथा उसके अन्दर पापवृत्तियों के कभी भी उत्पन्न न होने देने का उपक्रम किया गया है। अघमर्षण का अर्थ पाप प्रक्षालन या पाप विमोचन नहीं है, वरन् पापवृत्तियों के अंकुरित न होने देने के प्रबंध का नाम है 'अघमर्षण'। अतः चेतना के उच्चतम शिखर पर आरूढ साधक की आत्मा सृष्टि के सौन्दर्य तथा प्रकृति के ईश्वर प्रदत्त नयनाभिराम दृश्यों की झाँकियाँ देखकर अपने आप को ईश्वरीय विश्वास के वैभव से आच्छादित कर लेती है। अन्तर्निहित होती कालरात्रि, निकलते हुए सूर्य, चन्द्र, तारक मंडल, उछलते हुए सागर, कलकल निनादिनी नदियाँ, झरझर झरते हुए निर्झर- एक एक करके प्रत्यक्ष होते हैं-

उषा सुनहले तीर बरसती, जयलक्ष्मी सी उदित हुई,<br>
उधर पराजित कालरात्रि भी, जल में अन्तर्निहित हुई।<br>
वह विवर्ण मुख त्रस्त प्रकृति का, आज लगा हँसने फिर से,<br>
वर्षा बीती, हुआ सृष्टि में, शरद-विकास नये सिर से।

(प्रसाद : 'कामायनी')

## सत्यार्थ प्रकाश वार्ता-१३३

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के धारावाहिक स्वाध्याय के क्रम में सप्तम समुल्लास का अंश

### ईश्वर सिद्धि

**अहमिन्द्रो न परा जिग्य इद्धनं न मृत्यवेऽवतस्थे कदाचन। सोममिन्मा सुन्वन्तो याचता वसु न में पूरवः सख्ये रिषाथन॥४॥** ऋ० १०/४८/५

**अहं दा गृणते पूर्व्यं ब्रह्म कृणवं मह्यं वर्धनम्। अहं भुवं यजमानस्य चोदिताऽयज्वनः साक्षि विश्वस्मिन्भरे॥५॥** ऋ० १०/४९/१

मैं परमैश्वर्य्यवान् सूर्य के सदृश सब जगत् का प्रकाशक हूँ। कभी पराजय को प्राप्त नहीं होता और न कभी मृत्यु को प्राप्त होता हूँ। मैं ही जगत् रूप धन का निर्माता हूँ। सब जगत् की उत्पत्ति करने वाले मुझ ही को जानो। हे जीवो! ऐश्वर्य प्राप्ति के यत्न करते हुए तुम लोग विज्ञानादि धन को मुझ से मांगो और तुम लोग मेरी मित्रता से अलग मत होओ।।४।।

हे मनुष्यो! मैं सत्यभाषणरूप स्तुति करनेवाले मनुष्य को सनातन ज्ञानादि धन को देता हूँ। मैं ब्रह्म अर्थात् वेद का प्रकाश करनेहारा और मुझ को वह वेद यथावत् कहता उससे सब के ज्ञान को मैं बढ़ाता; मैं सत्पुरुष का प्रेरक यज्ञ



करनेहारे को फलप्रदाता और इस विश्व में जो कुछ है उस सब कार्य्य का बनाने और धारण करनेवाला हूँ। इसलिये तुम लोग मुझको छोड़ किसी दूसरे को मेरे स्थान में मत पूजो, मत मानो और मत जानो।।५।।

**हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः परिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥१॥**

यह यजुर्वेद का मंत्र है- हे मनुष्यो! जो सृष्टि के पूर्व सब सूर्य्यादि तेजवाले लोकों का उत्पत्ति स्थान, आधार और जो कुछ उत्पन्न हुआ था, है और होगा उसका स्वामी था, है और होगा। वह पृथिवी से लेके सूर्य्यलोक पर्यन्त सृष्टि को बनाके धारण कर रहा है। उस सुखस्वरूप परमात्मा ही की भक्ति जैसे हम करें वैसे तुम लोग भी करो।

(प्रश्न) आप ईश्वर-ईश्वर कहते हो परन्तु उसकी सिद्धि किस प्रकार करते हो?

(उत्तर) सब प्रत्यक्षादि प्रमाणों से।

(-क्रमशः)

## वेदांजलि

# साम्प्रदायिक झगड़ों को मिटाकर देश को समृद्ध करने का उपाय

❑ पं.शिव कुमार शास्त्री<br>
भू.पू.संसद सदस्य

**जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं नानाधर्माणं पृथिवी यथौकसम्।<br>
सहस्रं धारा द्रविणस्य मे दुहां ध्रुवेव धेनुरनपस्फुरन्ती।।**

-अथर्व.12/1/45

**शब्दार्थ-**

**(विवाचसम्)** विविध भाषाओं को बोलनेवाला **(नानाधर्माणम्)** अनेक विचार और क्रियाकलापों वाले **(बहुधा)** बहुत से और बहुत प्रकार के आकार-प्रकार और रंग-रूपवाले **(जनम्)** लोगों को **(यथौकसम्)** जैसे एक परिवार के छोटे-बड़े एक घर में रहते हैं [उस प्रकार से] **(बिभ्रती)** धारण करने वाली **(पृथिवी)** मातृभूमि **(अनपस्फुरन्ती)** बिना हिले-जुले, निश्चल **(ध्रुवा)** स्थिर भाव से खड़ी **(धेनु इव)** गौ के समान **(द्रविणस्य)** धन की [अन्न, फल, फूल, सोना, चाँदी, तांबा, लोहा आदि की] **(सहस्रं धारा)** जैसे गौ के स्तनों में से दुग्धधाराएँ निकलती हैं उसी प्रकार हजारों धाराएँ **(दुहाम्)** हमें प्राप्त हों।

**व्याख्या-**

मंत्र में कहा गया है कि जैसे एक परिवार में काले, गोरे, लम्बे और ठिगने मिलकर रहते हैं, जैसे परिवार में उग्र, सहनशील, भिन्न-भिन्न मनोवृत्ति के सदस्य तालमेल बैठाकर परिवार को चलाते हैं, उसी प्रकार 'नानाधर्माणम्'-भिन्न भिन्न प्रकार के मन्तव्यवाले, 'विवाचसम्'- जैसे एक परिवार और घर में रहते हैं, उसी प्रकार 'पृथिवी'- मातृभूमि पर भी उसी सौहार्द-स्नेह से रहें।

यदि किसी देश का यह सौभाग्योदय हो जावे तो मंत्र के उत्तरार्ध में कमाल की उपमा देकर कहा-जैसे कामधेनु दुधारू गौ अपने पैरों को अविरल जमाकर अपने चारों स्तनों से दूध की धारा बहा देती है, उसी प्रकार यह मातृभूमि-रूपी गौ अपने दुग्धरूप अमूल्य रत्न, सोना, चाँदी, तांबा, लोहा, गन्धक, अभ्रक, कोयला, पेट्रोल, अन्न, औषध, फूल-फलादि रूप दुग्ध की धाराओं से देश को तृप्त और आप्लावित कर दे। प्रभु कृपा करें कि भारत के नागरिक वेद के इस उपदेश के अनुसार अपना विचार और आचार बनाकर स्वर्ग का आनन्द लें।

यह हमारा दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि लम्बी दासता के बाद जब हमारी मातृभूमि स्वाधीन हुई तो दो टुकड़ों में विभक्त होकर। उस समय के हमारे कर्णधार दावे तो बढ़-चढ़के करते रहे कि हम भारत का विभाजन नहीं होने देंगे। उस समय के सर्वोपरि नेता महात्मा गांधी ने तो यहाँ तक कहा कि देश का बँटवारा नहीं होने दूँगा, चाहे मुझे अपना जीवन त्यागना पड़े, किन्तु देश का बँटवारा हुआ। यह विभाजन का कड़वा घूँट न चाहते हुए भी हमने गले से नीचे उतारा था कि हिन्दू और मुसलमानों के प्रतिदिन के झगड़े मिट जाएँगे। मुसलमान अपनी बहिश्त का आनन्द लें और हिन्दू भारत में शान्ति से रहें।

गत कई वर्षों से उसी प्रकार के हिन्दू मुसलमान के झगड़े होने लग गए हैं, जैसे अविभाजित भारत में हुआ करते थे। मन्दिर की आरती और मस्जिद की अजान पर, भारत के विभिन्न नगरों में, यहाँ तक कि भारत की राजधानी दिल्ली में भी झगड़े होते हैं। मुसलमान अपनी संख्या के अनुपात में पुलिस और दूसरे अर्द्धसैनिक संगठनों में मुसलमानों की भर्ती की माँग कर रहे हैं। परिणाम यह है कि जिस अशान्ति से बचने के लिए राष्ट्र का विभाजन स्वीकार किया गया था, वह व्यर्थ गया।

अबेर-सबेर यदि भारत को सुरक्षित रखना है तो इनके अधिकारों को सीमित करके राष्ट्र को बचाना होगा। जो यहाँ सन्तुष्ट नहीं हैं, उन्हें कहना होगा कि वे अपने बहिश्त में चले जाकर बस सकते हैं। यह होते ही उनके चिन्तन और व्यवहार की दिशा बदल जाएगी और अन्य नगरिकों के समान देशहित के कार्यों में रुचि लेने लगेंगे।

आखिर रहीम भी मुसलमान था, किन्तु भारतीयता के रंग में रंगा हुआ था। नवाबी छिनने पर संकट के दिन काटने रहीम चित्रकूट पर पहुँचे। वहाँ पहुँचते ही उन्हें भगवान् राम के वनवास के समय चित्रकूट में रहने का स्मरण हो आया और कहा-

*चित्रकूट में रमि रहे, रहिमन अवधनरेश।<br>
जापै विपता परत है, सो आवत यहि देश।।*

आज के मुसलमान के समान न उन्हें मक्का याद आया और न मदीना। उर्दू के शायर साहिर लुधिवानवी ने भी बड़ा सन्तुलित दृष्टिकोण उपस्थित करते हुए लिखा था-

*बिरहमन! नालये-नाकूस मस्जिद तक भी पहुँचा दे।<br>
बुरा क्या है मुअज्जिन भी अगर बेदार हो जाए।।*

(बिरहमन=पुजारी जी, ब्राह्मणों; नालये-नाकूस=शंख-ध्वनि; मुअज्जिन=मुल्ला, मस्जिद में अजान देने वाला; बेदार=जाग्रत)

स्वाधीन भारत के राष्ट्रीय विश्व विद्यालयों में इस प्रकार का ही वायुमंडल बनाना चाहिए, किन्तु भारत के भाग्य विधाता, अलीगढ़ विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय विश्वविद्यालय घोषित करते हैं, देश का करोड़ों रूपया व्यय करते हैं और साथ ही यह अनुमति भी देते हैं कि वह अपनी मुस्लिम चरित्र की विशेषताओं को बनाए रक्खें। जहाँ तक इस्लामिक साहित्य के अध्ययन-अध्यापन की बात है, उस पर किसी को आपत्ति नहीं हो सकती, किन्तु यहाँ तो मुस्लिम चरित्र से अभिप्राय भारतीय संस्कृति से विद्वेष है। इसको कैसे सहन किया जा सकता है?

यदि भारत के मुसलमान, ईसाई, बौद्ध, पारसी आदि इस देश को अपनी पवित्र मातृभूमि मानकर रहना चाहें तो इस मंत्र में बहुत ही महत्त्वपूर्ण परामर्श दिये गए हैं। इस भावना से विद्वेष की काली घटाएँ छँट जाएँगी, देश की स्वाधीनता का प्रखर अंशुमाली अपने दिव्य आलोक से भारत के कोने-कोने को दीप्त कर देगा।

('श्रुति सौरभ' से साभार)

www.thearyasamaj.org

# दयानन्द चरितम्

-आचार्य दीपंकर, मेरठ

छन्द-६५

परं भाग्यं तेषां जननसमये तु त्वमभव
स्त्वया सार्धं यातास्तव चरणचिन्हे च चलिताः।
तव श्रावं श्रावं समरपदयात्राप्रवचनं
महोत्कण्ठाग्रस्तं यतिवर ! मनो वंचितमिव।।

वे कितने सैभाग्यशाली रहे होंगे
जिनके जीवनकाल में तुम
विद्यमान रहे होगे !
वे तुम्हारे साथ चले होंगे और
तुम्हारे चरण-चिन्हों पर
कदम पड़े होंगे उनके !
तुम्हारे प्रवचनों, संघर्षों और
पदयात्राओं के सम्बन्ध में
जब बार बार सुनते हैं तो
उत्कण्ठा से मन भर उठता है
हमारा।
हे संन्यासी !
यह स्मरण करते ही हमारा मन
स्वयं को वंचित अनुभव करता है।।

*('दयानन्द चरितम्' से साभार, क्रमशः)*

## सत्संग

# जिज्ञासा और समाधान

**जिज्ञासा** : जून 2013 अंक में श्री अमृत खरे के 'विनय पीयूष' में पुनर्प्रकाशित और पिछले अंक में प्रकाशित 'मृत्यु बन्ध' व 'देह बन्ध' का सूक्ष्म अन्तर समझ में नहीं आया। कृपया स्पष्ट करने की कृपा करें।

*-कौशल किशोर श्रीवास्तव, भीष्म भवन, नया तिलक नगर, लखनऊ*

**समाधान** : पुनर्जन्म के साथ ही मनुष्य को मृत्युबंध से छुटकारा मिल जाता है। जीव को देह मिलती है और वह पुनः देहबन्ध में पड़ जाता है। इस तरह जीव देहबन्ध और मृत्युबंध के चक्र में घूमता रहता है। सामान्य भाषा में इसे जन्म-मृत्यु का चक्र कहा जाता है। इस चक्र से मुक्ति सुकर्मों से प्राप्त मोक्ष में मिलती है। मोक्ष भी असीमित अवधि के लिए नहीं होता। अन्ततः देहबंध और मृत्युबंध का चक्र पुनः प्रारम्भ हो जाता है। मंत्र में प्रथम मृत्युबंध से अलग होने अर्थात् इस जन्म की समस्या के समाधान की बात कही गई है; तत्पश्चात् देहबंध से पृथक् होने की बात कही गई है अर्थात् जन्म-जन्मान्तर की समस्या के समाधान की बात कही गई है।

**जन्म-मृत्यु चक्र**

(अ) मृत्युबंध (वर्तमान जन्म का बंधन)=तात्कालिक समस्या=अस्थाई समाधान

(ब) देहबंध (जन्म-जन्मान्तर का बंधन)=सार्वकालिक समस्या=स्थाई समाधान

सारांश : मनुष्य को (अ) तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए वरन् (ब) की प्राप्ति के लिए भी 'यजामहे' अर्थात् उद्योगरत रहना चाहिए। यह मंत्र वेद की व्यापक दृष्टि का परिचायक है। *-अमृत खरे*

(उच्चकोटि की जिज्ञासा हेतु श्री कौशल जी धन्यवाद के पात्र हैं- सं.)

**जिज्ञासा** : जो पुरुष सम्पूर्ण कामनाओं को त्यागकर ममता रहित, अहंकार रहित, इच्छा रहित होकर विचरता है वही शांति को प्राप्त करता है (गीता 2-71)।

गीता का उक्त श्लोक श्रेष्ठ है व उस भाव को हृदयंगम कर हमें चलना चाहिए या वैदिक यज्ञ करते समय जो 'स्विष्टकृदाहुति' - 'ओं यदस्य.....' के भावार्थ- हे परमात्मा! हमारी कामनाओं को बढ़ाओ, हमारी समस्त इच्छित पदार्थों की वृद्धि करो... इसका समाधान होना आवश्यक है।

*-पात प्रवीण, एम.एस. 120, सेक्टर-डी, अलीगंज, लखनऊ*

**समाधान** : (१) गीता का उपदेश परिस्थिति विशेष (धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे) तथा व्यक्ति विशेष (मोहग्रस्त अर्जुन) को ध्यान में रखकर है जबकि वेद की शिक्षाएँ मानव मात्र के लिए सार्वकालिक हैं। (२) गीता के श्लोक में जिस स्थिति की बात कही गई है; वह 'स्थिति प्रज्ञ' अथवा संन्यासाश्रम पर लागू होती है। संन्यासी के लिए स्विष्टकृदाहुति क्या; यज्ञ, हवन, पंचमहायज्ञ इत्यादि किसी भी विधि की आवश्यकता नहीं रह जाती है। किन्तु यदि आप संन्यासी नहीं हैं तो आपको स्विष्टकृदाहुति का आश्रय लेना ही उचित है। (३) स्विष्टकृदाहुति का अर्थ 'कामनाओं को बढ़ाओ' या 'इच्छित पदार्थों की वृद्धि करो' नहीं है। (यह अर्थ कपोलकल्पित है)। समृद्ध करने का अर्थ- पूर्ण करना या सफल करना है, न कि 'इच्छित पदार्थों की वृद्धि करो'। (४) कामना जरूरी नहीं, भौतिक या सांसारिक ही हो, आध्यात्कि तथा सात्विक कामनाएँ भी होती हैं, यथा- 'कामये दुःख तप्तानां प्राणिनामार्ति नाशनम्।', 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामयाः।', 'जिस देश जाति में जन्म लिया, बलिदान उसी पर हो जायें', 'प्राण! हमें ज्योतिर्मय कर दो!' इत्यादि। *-प्र. सं.*

*(पृष्ठ 1 का शेष.....)*

## स्वामी दयानन्द ने.....

की अदम्य शक्ति भी दी। श्रद्धानन्द जी ने पं.लेखराम द्वारा लिखित स्वामी जी की जीवनी की भूमिका में कहा है-

"मैंने केशवचन्द्र सेन, लालमोहन घोष, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी और ऐनी बेसेंट आदि व्याख्याताओं के भाषण सुने हैं पर मैं सच्चे दिल से कहता हूँ कि जो असर मुझ पर उस रोज़ के व्याख्यान ने किया और जो फसाहत मुझे उस रोज़ के सादे शब्दों में मालूम हुई वह अब तक तो दिखायी नहीं दी।...महाराज ने सत्य के बल पर बोलना आरम्भ किया। पादरी स्कॉट को छोड़कर पहले दिन के सब अंग्रेज सज्जन विद्यमान थे। कोई आदमी नहीं हिलता था। सब चुपचाप एकाग्र होकर व्याख्यान सुन रहे थे।..."

ऋषि ने कहा, "लोग कहते हैं कि सत्य को प्रगट न करो। कलेक्टर क्रोधित होगा, कमिश्नर अप्रसन्न होगा, गवर्नर पीड़ा देगा। अरे! चक्रवर्ती राजा क्यों न अप्रसन्न हो हम तो सत्य ही कहेंगे।... आत्मा का न तो कोई हथियार छेदन कर सकता है और न उसे आग जला सकती है", यह कहकर वे गरजती हुई आवाज़ में बोले, "यह शरीर तो अनित्य है। इसकी रक्षा में प्रवृत्त होकर अधर्म करना व्यर्थ है। इसे जिस मनुष्य का जी चाहे नष्ट कर दे...लेकिन वह सूरमा वीर पुरुष मुझे दिखाओ जो यह दावा करता है कि वह मेरी आत्मा का नाश कर सकता है। जब तक ऐसा वीर संसार में दिखायी नहीं देता मैं यह सोचने के लिए भी तैयार नहीं हूँ कि मैं सत्य को दबाऊँ या नहीं।"

यह वाणी किसी निष्कपट निडर व्यक्ति के हृदय से ही निकल सकती है। और उस समय अज्ञान, अन्धविश्वास और मूढ़ता के सुदृढ़ दुर्ग को धराशायी करने के लिए इसी की आवश्यकता थी। वे सूक्ष्म-से-सूक्ष्म विषयों पर ऐसी ही सरल भाषा में बोलते थे। वे अपने भाषणों को रोचक और हास्य-विनोद से पूर्ण बनाना भी खूब जानते थे। बीच-बीच में दृष्टान्त सुनाते रहते थे। और हँसाते रहते थे, पर उनकी विनोदप्रियता प्रायः व्यंग्य प्रधान और शिक्षाप्रद होती थी-

"एक राजा बैंगन खाकर सभा में आये, उस दिन उन्हें बैंगन बहुत स्वादिष्ट लगे थे। सभा में आकर उन्होंने कहा कि बैंगन बड़े स्वादिष्ट होते हैं तो दरबारी कहने लगे कि महाराज बैंगन तो शाकों का राजा है। देखिये इसका वर्ण श्रीकृष्ण के वर्ण के समान है और सिर पर मुकुट है। राजा ने बैंगन अधिक खा लिये थे। रात्रि में उन्होंने विकार किया। अतः अगले दिन सभा में आकर राजा ने बैंगन की बुराई की तो चाटुकार दरबारी भाट कहने लगे कि महाराज इन्हीं अवगुणों के कारण तो इसका वर्ण काला हो गया है और इसे यह दंड मिला है कि शाखा के नीचे लटकता रहे।"

इस कथा का बाद में पं.राधेश्याम कथावाचक ने अपने एक नाटक में प्रयोग किया। भाषणों की तरह सन् १८७४ के बाद वे शास्त्रार्थ भी हिन्दी में करने लगे थे। उनमें भी उन्हें प्रभावशाली और तर्कपूर्ण भाषा का प्रयोग करना पड़ता था। गूढ़-से-गूढ़ शास्त्रीय भाव को सहज भाषा में रखना स्वयं में सहज नहीं है पर स्वामी जी इस विद्या में निष्णात थे। इस कारण हिन्दी भाषा में एक अद्भुत निखार आया और अभिव्यक्ति की क्षमता पैदा हुई।

*('भारतीय साहित्य के निर्माता : स्वामी दयानन्द सरस्वती'- पुस्तक से साभार)*

# वाचनालय से

'दिग्विजय ने खुद को कर्मकाण्डी हिन्दू बताया' शीर्षक समाचार देते हुए **'दैनिक जागरण'** लिखता है कि बोधगया धमाकों में हिन्दू आतंकवादियों का हाथ होने का शक जताने के बाद कांग्रेस के भीतर भी सवालों में घिरे कांग्रेस महासचिव दिग्विजय सिंह अब खुद को हिन्दू होने का सुबूत दे रहे हैं। अल्पसंख्यकों खासतौर से मुस्लिमों के सबसे मुखर और स्वयंभू पैरोकार दिग्विजय ने संघ और भाजपा पर झूठा दुष्प्रचार अभियान चलाने का आरोप लगाया। साथ ही ऐलान किया कि वह कर्मकाण्डी हिन्दू हैं और हर एकादशी का व्रत रखते हैं। वहीं, उन्होंने भाजपा के हिन्दुत्व को धोखा करार दिया और कहा कि यह शब्द ही आर्य समाजी वीर सावरकर लाये थे। उन्होंने कहा कि इस शब्द की व्याख्या उनके गुरु शंकराचार्य भी नहीं कर सके।...

'दैनिक जागरण' के अनुसार दिग्विजय ने कहा, मेरे गुरु शंकराचार्य जी हिन्दुत्व को परिभाषित करने में नाकाम रहे। मुझे लगता है, सबसे पहले हिन्दुत्व शब्द का इस्तेमाल कट्टर आर्यसमाजी वीर सावरकर ने किया था। आर्य समाजियों की सनातन धर्म को लेकर कट्टरता सबको पता है। उन्होंने कहा कि एक हिन्दू के तौर पर उनका कर्त्तव्य है कि संघियों और उनके पोषित प्रोफेशनल्स द्वारा मुस्लिमों, ईसाइयों और दूसरे अल्पसंख्यकों के खिलाफ फैलाये जा रहे झूठ का पर्दाफाश कर सकें। दरअसल, बोधगया में धमाकों के बाद दिग्विजय ने इस घटना में हिन्दू संगठनों के हाथ होने की आशंका जताई थी। इस पर भाजपा-संघ परिवार ने हमला बोला ही था, साथ ही कांग्रेस के भीतर भी दिग्विजय पर गंभीर सवाल उठे थे। इससे बहुसंख्यकों में नाराजगी की आशंका भी पैदा हुई थी। दिग्विजय का यह ब्लॉग अपने खिलाफ पार्टी में होती लामबंदी को रोकने की दिशा में उठाया गया कदम माना जा रहा है।

'पाक में हिन्दू दुष्कर्म के सबसे ज्यादा शिकार' हैं वाशिंगटन से समाचार देते हुए **'श्रीन्यूज़'** बताता है कि पाकिस्तान में यूं तो अल्पसंख्यकों को आये दिन तंग किया जाता है लकिन एक स्वतंत्र अमेरिकी समूह की रिपोर्ट की मानें तो अल्पसंख्यकों में सबसे ज्यादा हिन्दुओं के साथ दुष्कर्म होता है। दरअसल अन्तर्राष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता पर अमेरिकी आयोग द्वारा किये गये अध्ययन मेंकहा गया है कि पिछले १८ महीनों के दौरान ७ हिन्दू लड़कियों के साथ दुष्कर्म की घटना घटी है। 'डेली टाइम्स' ने रिपोर्ट के हवाले से कहा है कि इतना ही नहीं, पाकिस्तान में १६ हमलों में २ हिन्दू मारे गये और ४ घायल हुए।

इसके अलावा निशाना बनाकर हुए हमलों में तीन और हिन्दुओं की जानें गईं हैं। इसके बाद पाकिस्तान में सिखों पर हमलों के तीन मामले सामने आये हैं, जिसमें एक सिख की मौत हुई। पिछले १८ महीनों में सांप्रदायिक हिंसा की २०३ घटनाएं घटीं जिनमें ७१७ लोगों के मारे जाने समेत १८०० लोग घायल हुए। मृतकों में ६३५ शिया मुस्लिम थे।

'पाकिस्तान की धार्मिक हिंसा परियोजना' शीर्षक से तैयार रिपोर्ट में कहा गया है कि देश में पहले से ही हिन्दुओं, ईसाइयों और अहमदियों के लिए कमजोर धार्मिक स्वतंत्रता का वातावरण जारी है।...अत्याचारों से तंग आकर कई पाकिस्तानी हिन्दू परिवार भारत की शरण में आ चुके हैं।

'नरभक्षी बने चीनी पी रहे हैं बेबी सूप' यह समाचार **'दैनिक भास्कर** ने दिया है। दैनिक के अनुसार दुनिया विचित्र है। चीन में बेबी सूप पीने और खाने का बड़ा प्रचलन है। सबसे पहले 'सियोल टाइम्स' ने यह खबर देकर दुनिया को झकझोर दिया। सोशल नेटवर्किंग साइट पर इस खबर को लेकर काफी आलोचनायें और कमेंट किए गए। अखबार और वेबसाइट पर छपी तसवीरों ने आग में घी डालने का काम किया। इसमें मानव भ्रूण के सूप लोगों को बड़े चाव से पीते दिखाया गया। चीन के दक्षिण गुआंगडोंग प्रान्त के एक कस्बे में परंपरानुसार हर्बल बेबी सूप पीने का चलन बरसों से है। माना जाता है कि यह सूप शरीर में स्टेमिना और सेक्स ताकत को कई गुना बढ़ा देता है। जन्म के करीब और नेचुरल मृत नवजात बच्चों की कीमत दो हजार युआन (करीब बीस हजार रूपये) है, वहीं जो गर्भ में गिराये जाते हैं, उनके कुछ सौ युआन कीमत लगाई जाती है।...पत्र लिखता है कि सबसे बड़ी बात यह है कि लोग बिना किसी घृणा और शर्म के ऐसे काम किये जा रहे हैं। पत्र के अनुसार 'माओं कल्चर रिवोल्यूशन' से लेकर अब तक चीन में नैतिकता और मानवजाति के प्रति सम्मान की भावना खत्म हो चुकी है।

**'श्रीन्यूज**' के अनुसार 'अमेरिका में बढ़ रहा हिन्दी का दबदबा'। समाचार के अनुसार इन दिनों अमेरिका में हिन्दी का दबदबा बढ़ता जा रहा हे। एक रिपोर्ट के मुताबिक अमेरिका में ६.५ लाख लोग हिन्दी बोलते हैं।...भाषा के आधार पर गणना की रिपोर्ट मंगलवार को जारी हुई।....'यू.ए.एस. में प्रयुक्त भाषाएं-२०११' शीर्षक रिपोर्ट में घरों में अंग्रेजी के अलावा बाकी भाषाएं बोलने वाले लोगों की जानकारी एकत्र की गयी है। इस रिपोर्ट के मुताबिक अमेरिका में ६,४८,६८३ लोग हिन्दी में बातचीत करते हैं।

'हिन्दुओं की कमजोरियाँ' बताता कृष्णचन्द्र गर्ग का विचारोत्तेजक लेख **'दयानन्द सन्देश'** मासिक (दिल्ली) ने प्रकाशित किया है। लेखक लिखता है कि प्रायः करके, हिन्दू मान बैठे हैं कि सभी मजहब एक ही सत्य ईश्वर की ओर ले जाते हैं। यह बात उतनी ही गलत है, जितनी कि यह कह देना कि चण्डीगढ़ से सभी रास्ते दिल्ली को जाते हैं। सभी सम्प्रदायों में ईश्वर, जीवात्मा, कर्मफल, पुनर्जन्म आदि की अवधारणाएं अलग- अलग हैं। मुसलमान तो गैर मुसलमान को यातनाएं देना और जान से मार देना स्वर्ग में जाने का साधन मानते हैं। हिन्दुओं को छोड़ सभी सम्प्रदाय अपने-अपने सम्प्रदाय को सबसे बढ़िया बताते हैं। उसे बढ़ाने का प्रयास करते हैं। वैदिक धर्म की मान्यताएं सर्वश्रेष्ठ होते हुए भी हिन्दू उन से अनभिज्ञ है और जानने की इच्छा भी नहीं रखते। सरकार द्वारा प्रसारित 'सर्व धर्म समभाव' की झूठी धारणा को हिन्दू गले लगाये हुए है।

www.thearyasamaj.org


# शुभाकांक्षा

मैं पत्र का नियमित पाठक हूँ। इतने लघुकाय पत्र में इतनी विशाल सामग्री का समायोजन आपकी कुशलता का परिचायक है। मुखपृष्ठ पर अमृत खरे जी द्वारा वेद मंत्र के काव्यानुवाद के साथ ही अद्भुत नवीन-नवीन विषयों को संजोए हुए लेखों द्वारा हृदयस्पर्शी जानकारियां प्राप्त होती हैं। ज्वलन्त विषयों पर आपका हृदयग्राही सम्पादकीय अतुलनीय होता है। 'सत्यार्थ प्रकाश वार्ता', 'वेदांजलि', 'दयानन्द-चरितम्', 'वाचनालय से', 'मनुष्य का विराट् रूप', तथा 'ईश्वर ने दुनिया क्यों बनाई' स्तम्भ पत्र को मनोहारी बनाने वाले हैं। समाचारों का उत्तम संकलन आर्य जगत की गतिविधियों की जानकारी देने में पूर्णरूप से सक्षम है। 'काव्यायन' के अन्तर्गत संकलित कविताएँ पढ़कर मन गद्गद् हो जाता है। शुभाकांक्षाओं से भरा पृष्ठ आपके कुशल संपादन की कहानी स्वतः बखानता है। आप द्वारा योजित ऊर्जा कल्पनातीत है। शत् शत् नमन।

'वैदिक ध्यान योग-संध्योपासना' विषय पर मेरा नम्र निवेदन निम्नवत् है-

१. महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की उत्तराधिकारिणी 'परोपकारिणी सभा' द्वारा १५ मिनट की ध्यान पद्धति महर्षि दयानन्द, वेद व आर्षग्रन्थों के अनुसार विगत वर्ष तीन त्रिदिवसीय विद्वत् गोष्ठियों में ध्यान योग क्षेत्र के वैदिक विद्वानों से पर्याप्त विचार विमर्श करके तैयार की गयी है। यह ध्यान पद्धति प्रारम्भिक साधकों हेतु बनाई गयी है। समयाभाव के कारण जो व्यक्ति ध्यान तो करना चाहते हैं किन्तु इस ओर उन्मुख नहीं हो पाते हैं, उनके लिए यह १५ मिनट की ध्यान पद्धति अत्यन्त उपयोगी है।

२. सभा द्वारा इसके साथ ही एक ३० मिनट की ध्यान पद्धति भी तैयार की गयी है, जो थोड़ा अधिक समय निकाल सकने वाले साधकों के लिए उपयोगी होगी।

३. सभा द्वारा ११-१७ अप्रैल, २०१३ तक इस १५ मिनट की ध्यान पद्धति के प्रशिक्षक तैयार करने हेतु एक प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया था। इस शिविर में ५० प्रशिक्षार्थियों को प्रशिक्षण देकर लिखित एवं ध्यान की प्रायोगिक प्रस्तुति कराने के उपरान्त ३६ व्यक्तियों को प्रशिक्षक का प्रमाण पत्र प्रदान गया। आगामी प्रशिक्षण शिविर २४ नवम्बर से १ दिसम्बर २०१३ को प्रस्तावित है।

४. परोपकारिणी सभा द्वारा आगामी मार्च २०१४ में अगली विद्वत् गोष्ठी प्रस्तावित है। इस गोष्ठी में २४ मिनट तथा एक घंटे की ध्यान पद्धति का प्रारूप तैयार किया जाना है। एक घण्टे की ध्यान पद्धति में संध्या का पूर्ण रूप से समायोजन किया जाना प्रस्तावित है।

५. वैदिक ध्यान पद्धति के संयोजक पूज्य आचार्य सत्यजित् जी द्वारा वैदिक संध्या को पूर्ण ध्यान योग स्वीकार किया गया है।

अतएव, आपसे नम्र निवेदन है कि परोपकारिणी सभा द्वारा वैदिक संध्या को नकार कर यह पद्धति तैयार नहीं की गयी है। विभिन्न समयान्तरालों की ध्यान पद्धति को तैयार करने का एक मात्र उद्देश्य विभिन्न श्रेणी के साधकों की अनुकूलता को दृष्टिगत करन है।

*-सेवकराम आर्य*

*आर्यसमाज, हसनगंज पार, लखनऊ*

***

आपकी यह पत्रिका निरन्तर प्रगति पर है, इसका सम्पादकीय संग्रहणीय होता है। जून २०१३ अंक में श्री अमृत खरे के 'विनय पीयूष' में पुनर्प्रकाशित और पिछले अंक में प्रकाशित का अन्तर 'मृत्यु बन्ध' व 'देह बन्ध' का सूक्ष्म अन्तर समझ में नहीं आया। कृपया स्पष्ट करने की कृपा करें। *(देखें पृ. ३)*

डॉ.रूपचन्द्र दीपक आर्य जगत के सूर्य हैं। विचार शक्ति, लेखन शैली व अभिव्यक्ति (भाषण) मन को आह्लादित करती है। जुलाई-अगस्त, २०१२ के अंक में हिग्स-बोसोन, गाड पार्टिकल पर लेख ने वैज्ञानिकों को भी अचम्भित किया है। सम्प्रति जुलाई अंक में मन-मन के वासी प्रभु को खोजने तो कदापि नहीं पर समूचे जनमानस व सरकार को उद्वेलित करने में सक्षम है।

*-कौशल किशोर श्रीवास्तव*

*भीष्म भवन, नया तिलक नगर, लखनऊ*

***

'आर्य लोक वार्ता' का जून अंक प्राप्त हुआ। अंक पिछले अंकों की तरह पठनीय व संग्रहणीय है। पत्र के सम्पादकीय ने सर्वाधिक प्रभावित किया है। आपने अपनी लेखनी बहुत ही गंभीर विषय पर उठायी है कि क्या हम भी अन्य गुरुओं की तरह अलग मार्ग पर चल निकले हैं या सस्ती लोकप्रियता की प्राप्ति के लिए स्वामी दयानन्द के बताये मार्ग जो कि वैदिक मार्ग है, से हट गये हैं। आपने अपने पत्र के द्वारा सभी आर्य जनों को यह सोचने पर मजबूर कर दिया जिसके लिए आपको साधुवाद।

आपने 'अनुकरणीय' कालम के अन्तर्गत 'चित्र नहीं चरित्र की पूजा' विषय भी बहुत ही अच्छा चुना है। चित्र पर माल्यार्पण की परम्परा पर बहुत अच्छा कुठाराघात है। आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है कि आप इसी तरह के विषय द्वारा हम सभी का सही मार्गदर्शन करते रहेंगे। बाकी सब सामग्री हमेशा की तरह उच्च स्तरीय है।

*-यतीन्द्र निगम*

*नई बस्ती, सीतापुर*

***

'आर्य लोक वार्ता' जून अंक में सर्व प्रथम मैंने सम्पादकीय पढ़ी, वैदिक ध्यान योग-संध्योपासना पढ़कर मुझे योग का सत्य ज्ञान हुआ। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने वैदिक संध्या पद्धति के रूप में एक सम्पूर्ण ध्यान योग पद्धति हमें दे दी और उसे ब्रह्म यज्ञ का नाम दिया। पढ़कर विदित होता है कि मैं और मेरा परिवार सत्य के मार्ग पर ही चल रहा है। साहित्यकार श्री नरेन्द्र भूषण जी की कविता 'बचपन' ने मुझे अपने बचपन में लौटा दिया। श्री आनन्द कुमार जी का 'मनुष्य का विराट् रूप' धर्म पूर्वक कर्तव्य पालन करने के लिए प्रेरित करता है। 'ईश्वर ने दुनिया क्यों बनाई' बहुत ही ज्ञानवर्धक है। ईश्वर न्यायकारी है इसलिये हिन्दू हो या मुसलमान लेकिन शुभ और अशुभ कर्मों का फल अवश्य ही भोगना पड़ता है। शुभाकांक्षा को पढ़कर जब यह विदित हुआ कि रामनवमी आपका जन्मदिवस है, तो अत्यंत हर्ष हुआ। हमलोग सपरिवार आपको हार्दिक बधाई देते हैं और आपके मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद की आकांक्षा रखते हैं। *-दीप्ति निगम*

*नई बस्ती, सीतापुर*

***

आर्य लोक वार्ता का नवीन अंक मुझे प्राप्त हुआ। विशेष रूप से सम्पादकीय लेख ने मुझे अत्यंत आकर्षित किया। बहुत सी पत्रिकाओं को पढ़ने के बाद आर्य लोक वार्ता पढ़कर मुझे यह आभास हुआ ''ज्यों गूँगे मीठे फल को रस अन्तरमन ही भावै।'' पं.शिवकुमार शास्त्री द्वारा लिखित 'सेनापति के गुण' ने शोधपरक उदाहरण देकर पाठकों का मन मोहा। देश की विभिन्न क्रिया कलापों से परिचित कराते रहते हैं। काव्यायन में गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र', डॉ.कैलाश निगम, नरेन्द्र भूषण, डॉ.मिर्जा हसन नासिर, डॉ.सन्तोष शर्मा, डॉ.वेद प्रकाश आर्य, डा.रेनू सिंह आदि रचनाकारों की रचनायें विशेष रूप से प्रेरणादायक रहीं।

अतः आपको, आपके सम्पादक मंडल, छायाकारों को कोटिशः धन्यवाद।

*-दिनेश मिश्र 'राही'*

*अम्बिका पुरम, आनंद नगर, सीतापुर*

***

'आर्य्य लोक वार्ता' का जुलाई, २०१३

अंक प्राप्त कर आनन्दित हुआ। मुख पृष्ठ पर डॉ.रूपचन्द्र 'दीपक' जी ने उत्तराखण्ड त्रासदी की समीक्षा तीन कारकों के अन्तर्गत बिल्कुल नवीन एवं अनूठे प्रकार से की है। सम्पादकीय के अन्तर्गत संध्या-उपासना पर भी बड़ी विद्वत्तापूर्वक सविस्तार प्रकाश डाला गया है। पं.रामचन्द्र देहलवी जी की व्याख्यानमाला 'ईश्वर ने दुनिया क्यों बनाई?' की अंतिम किस्त भी असरदार है। यह व्याख्यानमाला विगत कई मास से इस पत्र की शोभा बढ़ा रही थी।

काव्यायन के अन्तर्गत मधुकर अष्ठाना, डॉ.शितिकण्ठ तथा जयशंकर प्रसाद की रचनाएँ विशेष रूप से पसन्द आईं। अन्य सामग्री भी पठनीय है।

*-डा.मिर्ज़ा हसन नासिर*

*जी-०२, लोरपुर रेजीडेन्सी, न्यू हैदराबाद, लखनऊ*

***

जुलाई २०१३ अंक में डॉ.रूपचन्द्र 'दीपक' का प्रकाशित लेख 'उत्तराखण्ड की आपदा की जिम्मेदार. ...' में विद्वान् लेखक द्वारा उत्तराखण्ड की त्रासदी के कारकों का जो विश्लेषण किया गया है वह जनता और सरकार की गलतियों को पूर्णतया उजागर करता है। भविष्य में ऐसी गलतियों की पुनरावृत्ति न हो ऐसा सोचने के लिए विवश और चिन्तित करता है। प्रत्येक के हृदय में वास करने वाले प्रभु को खोजने के लिए किसी स्थल विशेष पर इतना जन सैलाब न हो कि विपरीत परिस्थितियों में जनधन की विशाल हानि हो जाय। अन्तर्मन में ही ईश्वर की खोज एक सच्चाई है, यथार्थ है, कटु सत्य है।

आर्य लोक वार्ता एक लघु पत्रिका है किन्तु इसमें प्रकाशित सामग्री वैदिक विचारों की गहराई तक ले जाने में सक्षम है। 'जिज्ञासा और समाधान' शीर्षक के अन्तर्गत प्रकाशित सूक्ष्म लेख आर्य सभासदों की ज्ञानवृद्धि के लिए श्रेष्ठ है। एक बार मेरे आवास पर एक आर्य विदुषी द्वारा यज्ञ सम्पन्न कराया गया। यज्ञोपरान्त घृतपात्र में जल डालकर 'तनूपा' कराया गया। हाथों में घृतजल मिश्रण मलने के बाद यज्ञाग्नि में दूर से तपाकर यजुर्वेद के मंत्र 'ओं तेजोऽसि' के साथ हाथों को मुखमण्डल से दूर रखते हुए दर्पण की तरह दिखाए गए। शायद यह विधि अपूर्ण थी।

अंक में प्रकाशित समस्त सामग्री सारपूर्ण, सुरुचिपूर्ण और ज्ञानोपयोगी है। विद्वान प्रधान सम्पादक को पुनः पुनः उत्कृष्ट सम्पादकीय लेखन के लिए बार-बार बधाई। *-नरसिंह पाल*

*उपप्रधान, आर्यसमाज, इन्दिरानगर, लखनऊ*

***

'आर्य लोक वार्ता' मासिक ने अपनी

यात्रा के १५ वर्ष पूर्ण कर लिये हैं और १६वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है- यह समाचार सुखद होने के साथ विस्मय कारक भी है। स्वतंत्र रूप में लखनऊ से प्रकाशित होने वाले आर्य पत्रों में यह एक कीर्तिमान 'आर्य लोक वार्ता' के नाम है। आर्य समाज और आर्य संस्कृति के जीवन और जागरण के आपके उपक्रम का मैं हार्दिक अभिनंदन करती हूँ।

'आर्य लोक वार्ता' जुलाई २०१३ अंक में पृष्ठ ८ पर 'तस्य वाचक प्रणवः' शीर्षक से आपने- जिस स्मारिका की मुक्तकंठ से प्रशंसा करके, उसे एक बार देखने और पढ़ने की लालसा जागृत कर दी है। यदि हो सके तो उक्त स्मारिका पढ़ने हेतु उपलब्ध कराने का कोई प्रबंध करें- जिससे हमलोग स्वर्गीया शकुंतला श्रीवास्तव तथा उनके पुत्रों आदि के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकें।

इसी अंक में डॉ.रूपचन्द्र दीपक का लेख 'उत्तराखण्ड की आपदा की जिम्मेदार जनता और सरकार' प्रशंसनीय है। जिन तत्वों की ओर संकेत किया गया है उससे नागरिकों व सरकार दोनों को सतर्क हो जाना चाहिए। जुलाई अंक में व इससे पूर्व अंक में संध्योपासना के ध्यानयोग के परिप्रेक्ष्य में एक अच्छी व्याख्या करते हुये उसके मर्म को भली प्रकार समझाया गया है, इसके लिए आप प्रशंसा के पात्र हैं। मंत्रों की अर्थ सहित व्याख्या आवश्यक होती है।

आपकी वैदिक आस्था, वैदिक विचार धारा को प्रचारित करने के लिये आपको प्रेरित करती रहेगी, ऐसा विश्वास है। अंत में आपके व आर्य लोक वार्ता के लिये हमारी शुभकामनाएँ!

*-सुधा चौधरी*

*पूर्व प्राचार्या, आर्य कन्या महाविद्यालय, हरदोई*

***

आर्य लोक वार्ता जुलाई अंक में 'सामयिकी' के अन्तर्गत उत्तराखण्ड आपदा पर अत्यंत सटीक एवं वैज्ञानिक विवेचना प्रस्तुत की है। एतदर्थ लेखक डॉ.रूपचन्द्र 'दीपक' सचमुच बधाई के पात्र हैं। बादल फटना तथा प्राकृतिक असन्तुलन जैसे तथ्यों को व्यावहारिक भाषा में समझाया गया है किन्तु देश की

नदियों को आपस में जोड़ देने की परिकल्पना अदूरदर्शितापूर्ण तथा अप्राकृतिक है। ऐसी भीमकाय परियोजना का क्रियान्वयन प्रकृति के साथ घोर अन्याय होगा। हमें पर्वत, नदी, वन, वन्यजीवों आदि का समुचित संरक्षण, अनुरक्षण तथा संवर्द्धन करके ही पर्यावरणीय सन्तुलन स्थापित करना चाहिए। सम्पादकीय में सन्ध्योपासना (२) से वैदिक वाङ्मय द्वारा उपयोगी ज्ञान प्रदान किया गया है। डग ऐंजेल बर्ट के कम्प्यूटर माउस आविष्कार से वेदमंत्रों की क्रियाओं की तुलना सचमुच आह्लादकारी एवं आश्वस्तिजनक लगी। जिज्ञासा, वेदांजलि, अक्षरलोक आदि स्तम्भों में स्तरीय जानकारियाँ प्रदान की गयी हैं। 'ईश्वर ने दुनिया क्यों बनाई?' व्याख्यानमाला की समाप्ति से आघात लगा है। आशा है शीघ्र ही वैज्ञानिक सोच के अनुकूल ज्ञान शृंखला प्रारम्भ करेंगे। काव्यायन में मधुकर अस्थाना का गीत, डॉ.कैलाश निगम का छंद तथा रेनू सिंह, विनोदिनी रस्तोगी की कविताएँ प्रभावपूर्ण लगीं। विनय पीयूष में भी अमृत खरे का काव्यानुवाद परम आनन्द दायक होता है। कवि मनीषी को अमित साधुवाद। आर्ष ग्रन्थों के अनुशीलन से ही जनमानस में व्याप्त दूषित मनोवृत्तियों का परिष्कार हो सकता है। महान राष्ट्रचेता स्वामी दयानन्द के कल्याणकारी अभियानों के सार्थक क्रियान्वयन से ही देश का उद्धार सम्भव है।

प्रेरक अगस्त-क्रांति स्मृति, अद्यावधि भी अति समीचीन।
अंग्रेज छोड़कर गए देश, अंग्रेजी विष दे घिर नवीन।
गौ-हत्या पर प्रतिबंध नहीं, देश को मद्य से नहीं मुक्ति।
था स्वामी का सपना सुराज, हैं खड़े वक्ष पर पाक-चीन।।

*-गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'*

*११७, आदिलनगर, लखनऊ -२२६०२२*

***

आर्य लोक वार्ता जुलाई अंक विलम्ब से प्राप्त हुआ, सभी महानुभावों के विचारों

से प्रभावित हुई। हर्ष की बात तो यह है कि आर्य लोक वार्ता के प्रकाशन के १५ वर्ष बीत गए और वर्तमान १६वाँ वर्ष प्रारंभ हो गया है, ईश्वर करे लक्ष्य पर शतायु आरोहण करे यही चाहना है।

डॉ.रूपचन्द्र 'दीपक' का प्रथम पृष्ठ पर प्रकाशित लेख उत्तराखण्ड आपदा के तीन मुख्य कारकों की सत्यता को दर्शाते हुए समुचित प्रकाश डाला गया है। सम्पादकीय में 'वैदिक ध्यान-योग' पर अच्छा प्रकाश डाला गया है, सराहनीय है। 'वेदांजलि' में सनातन वैदिक धर्म की परिभाषा पर बड़ा ही मनोवैज्ञानिक प्रकाश डाला गया है। 'मनुष्य का विराट रूप' सदैव मानव हित चिन्तन से परिपूर्ण होता है। 'ईश्वर ने दुनिया क्यों बनाई?' जन साधारण की समझ में आने वाली भाषा में बहुत प्रभावशाली था। 'वाचनालय से' द्वारा अमृत खरे जी के कुछ खोजपूर्ण तथ्य प्रकाश में आये हैं। 'काव्यायन' में सभी कवितायें अपना विशेष महत्व रखती हैं फिर भी मधुकर अष्ठाना की कविता समयोचित है। साथ ही डॉ.कैलाश निगम और गौरीशंकर 'विनम्र' की कवितायें प्रभावित करती हैं।

*-प्रमोद कुमारी*

*एम.एस.-३७, सेक्टर-डी, अलीगंज, लखनऊ*

***

www.thearyasamaj.org


धारावाहिक-(36)

# मनुष्य का विराट् रूप

-श्रीआनन्दकुमार-

## कर्त्तव्य और अधिकार

आजकल लोगों में अधिकार-लोलुपता बढ़ गई है। चारों ओर अधिकारों की माँग है- कोई नागरिकता का अधिकार चाहता है, कोई शासन का; पति पत्नी पर अधिकार चाहता है और पत्नी पति पर चाहती है। इसी प्रकार जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इसके लिए परस्पर स्पर्द्धा, छीनाझपटी चल रही है। न्यायपूर्वक किसी को कोई अधिकार कैसे मिलता है, इस सम्बन्ध में एक पौराणिक कथा उल्लेखनीय है।

१-एक पौराणिक कथा

एक बार वरुण देवता के शाप से राजा हरिश्चन्द्र को असाध्य जलोदर रोग हो गया। महर्षि वसिष्ठ ने उन्हें शाप से छुटकारा पाने के लिए एक पुत्र खरीद कर नरमेध-यज्ञ करने की सम्मति दी। राजा की आज्ञा से उनका मन्त्री बलिपुत्र की खोज में निकला। उसे अनेक देश, नगर ग्राम छान डाले, परन्तु कहीं सफलता नहीं मिली। कोई शतपुत्रवान् या कुपुत्रवान् भी किसी मूल्य पर अपने आत्मज का अहित करने को तैयार नहीं था।

सब ओर से निराश होकर राजमन्त्री अपने राज्य में लौट आया। वहाँ पर किसी ग्राम में अजीगर्त्त नामक एक महादरिद्र और लोभी ब्राह्मण रहता था। उसके तीन पुत्र थे। राजमन्त्री स्वर्णमुद्राओं की थैलियाँ लिए उसके पास जाकर बोला- भूदेव, आप जीते जी प्रेतयोनि में क्यों पड़े हैं? इन तीनों में से एक पुत्र आपका उद्धार कर सकता है। अजीगर्त्त ने कहा- मंत्रिवर, इनमें से एक भी मेरे काम का नहीं है। मेरा उद्धार तो वही भगवती कर सकती हैं जो इस समय आपकी मुट्ठी में है।

चतुर मंत्री बोला- मेरे पास जो कुछ भी है, उसे आप न्यायपूर्वक ले सकते हैं। न्याय यह है कि यदि आप मुझसे धन लेते हैं तो उसके बदले मुझे भी कोई वस्तु प्रदान करें। इस समय आपके पास आवश्यकता से अधिक पुत्र हैं। वे आपके लिए व्यर्थ और भार-स्वरूप हैं। मुझ महाराजा हरिश्चन्द्र के लिए एक क्रीतपुत्र की आवश्यकता है। धर्मयज्ञ में उसे बलि देकर महाराज वरुणदेव को सन्तुष्ट करना चाहते हैं। आप इनमें से एक को भी मेरे हाथ बेंच दें तो मैं आपको यथेच्छ धन दूँगा। इस युक्ति से आपके उस बलिदान होने वाले सुपुत्र को तो स्वर्गलाभ होगा ही, आप स्वयं धन-वैभव-सम्पन्न होकर सपरिवार शेष जीवन सुख और सम्मान से बिता सकेंगे। यदि आप ऐसा नहीं करते तो शीघ्र ही बाल-बच्चों के साथ भूखों मर जायेंगे। बसुन्धरा में वसुकीट (दरिद्र) होकर रहना घोर कष्टकर और अपमानजनक है।

धन-लोलुप अजीगर्त्त का मन उस समय मंत्री की थैलियों में समा गया था। उसका प्राण अपने पुत्रों में नहीं, पराये पैसों में था। मंत्री का मंत्र काम कर गया। ब्राह्मण ने यथेष्ट द्रव्य लेकर एक पुत्र को बेचना स्वीकार कर लिया। अब प्रश्न यह उपस्थित हुआ कि बलिदान के लिए किस पुत्र को बेचा जाय। पिता ने कहा कि मैं ज्येष्ठ पुत्र को नहीं बेचूँगा, क्योंकि उसके बिना मुझे मरने पर पिण्ड-दान कौन देगा? माँ ने कहा-मुझे सबसे छोटा पुत्र प्राणों से भी प्यारा है, मैं जीते-जी अलग नहीं होने दूँगी। अब बचा मंझला लड़का। अजीगर्त्त ने उसी को घर का बोझ समझकर अच्छे मूल्य पर सहर्ष बेच दिया। उसका नाम था शुनःशेप।

राजमंत्री शुनःशेप को लेकर राजा हरिश्चन्द्र के पास पहुँचा। व्याधिपीड़ित राजा ने ऋषि-मुनियों के सहयोग से यथाशीघ्र यज्ञ प्रारम्भ कर दिया। उसमें अन्य पीड़ितों के साथ अजीगर्त्त भी दक्षिणा के लोभ से आया। सबके सामने बालक शुनःशेप बलिदान के लिए यूपकाष्ठ में बाँध दिया गया। जब उसे ज्ञात हुआ कि अभी मैं मार डाला जाऊँगा तो वह भयभीत होकर चिल्लाने लगा। उसका करुण-क्रन्दन सुनकर कठोर कर्म-काण्डी भी दया-द्रवित हो गये। सिद्धहस्त शमिता (यज्ञ में बलि चढ़ाने वाला) ने अस्त्र फेंककर कहा- मैं भी मनुष्य का हृदय रखता हूँ, वेतन के लोभ से ऐसा अमानुषिक कर्म नहीं कर सकता।

शुनःशेप का आर्त्तनाद सुनकर कोई भी उसका वध करने को तैयार नहीं हुआ। राजा को चिन्तित देखकर हृदयहीन अजीगर्त्त उठकर बोला- महाराज, यज्ञ तो निर्विघ्न समाप्त होना ही चाहिए; आपने मुझे जितना धन दिया है उसका दोगुना और दें तो मैं अभी इस बलि-पशु का वध करके आपका मनोरथ सिद्ध कर दूँगा। हरिश्चन्द्र ने दूना धन देना स्वीकार कर लिया। अजीगर्त्त तत्काल हाथ में अस्त्र लेकर शुनःशेप का सिर काटने के लिए तैयार हो गया। सदस्यों के हाहाकार और धिक्कार से यज्ञ-मण्डप गूँज उठा। महर्षि विश्वामित्र से यह निष्ठुर कार्य नहीं देखा गया। वे उठकर राजा से बोले- राजन्, यह दीन बालक दया का पात्र है, इसे मुक्त कर दो। मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि इस शुभ कर्म से तुम्हारा अनुष्ठान पूर्ण हो जायगा; तुम अपने पुण्य-प्रभाव से रोग-शोक से मुक्त हो जाओगे। अमानुषिक रीति से धर्म कार्य सफल नहीं होता।

हरश्चिन्द्र ने महर्षि की बातों पर ध्यान नहीं दिया। उन्होंने बाल-बलि से वरुणदेव को प्रसन्न करके स्वास्थ्य-लाभ करने में ही अपना परम स्वार्थ समझा। राजा की निर्दयता से भी विश्वामित्र हताश नहीं हुए। उन्होंने स्वयं स्नेहपूर्वक निस्सहाय शुनःशेप के पास जाकर उसे धैर्य दिया और सिद्ध वरुण-मंत्र बताकर कहा- वत्स, तुम श्रद्धा-विश्वास के साथ इस मंत्र से वरुण देवता का आह्वान करो, वे तुम्हारी रक्षा करेंगे।

शुनःशेप ने रोना-चिल्लाना छोड़कर भक्ति-भाव से वरुण-मंत्र जपना प्रारम्भ कर दिया। इधर से निर्मम अजीगर्त्त उसका सिर काटने के लिए आगे बढ़ा, उधर से आपदोद्धारक के रूप में वरुण आ गए। उन्होंने हरिश्चन्द्र से कहा- राजन्, इस कातर प्राणी ने संकट-काल में मंत्र द्वारा मेरी स्तुति की है; अब मुझे इसका हित करना चाहिए; तुम इसे बन्धनमुक्त कर दो; मैं तुम्हें शाप से मुक्त करता हूँ।

राजा ने वरुण के आदेश से बालक को मुक्त कर दिया। उनका जलोदर रोग भी शाप के साथ शान्त हो गया। इस प्रकार अहिंसात्मक रीति से यज्ञ सम्पन्न होने के उपरान्त शुनःशेप ने उपस्थित मनीषियों को सम्बोधन करके कहा- सज्जनों, जिस प्रयोजन से राजा ने मुझे अपना पुत्र बनाया था, वह अब समाप्त हो गया। इस समय आप लोक धर्मपूर्वक निर्णय कर दें कि मेरा पिता कौन है, जिससे मैं उनका अनुगमन कर सकूँ।

*(मनुष्य का विराट् रूप से साभार, क्रमशः)*

होता सदस्य परिचय-45

वैदिक परम्परा के संवाहक

## श्री वीरेन्द्र कुमार टण्डन

-पाल प्रवीण-

बहराइच (उ.प्र.) के प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री एवं सामाजिक कार्यकर्ता श्री वीरेन्द्र कुमार टण्डन का नाम किसी परिचय का मोहताज नहीं है। बहराइच में शिक्षा तथा समाज से संबन्धित शायद ही कोई व्यक्ति हो जो श्री टण्डन के नाम से परिचित न हो। पिता श्री मथुरा प्रसाद टण्डन तथा माता श्रीमती कृष्णा कुमारी के घर में 28 दिसम्बर 1928 को जिस बालक ने जन्म लिया; आगे चलकर उसे वीरेन्द्र कुमार का नाम मिला। आपकी स्नातक स्तर तक शिक्षा-दीक्षा कानपुर में हुई। वी.एन.एस.डी. कानपुर से विज्ञान स्नातक की डिग्री प्राप्त करने के बाद आपने 1951 में लखनऊ विश्वविद्यालय से मास्टर आफ साइन्स की उपाधि हासिल की।

श्री वीरेन्द्र अपने पूज्य पितामह कालिका प्रसाद टण्डन के विचारों से विशेष प्रभावित हुए। शिक्षा विभाग में सेवाकार्य प्रारंभ करते हुए आपने राजकीय विद्यालयों के प्रधानाचार्य के रूप में अपनी उत्कृष्ट सेवाएँ प्रदान कीं। सेवा काल में दृढ़तापूर्वक नियम पालन में आपने अच्छी कीर्ति अर्जित की। उच्चाधिकारियों के बेजा दबाव के समक्ष आप कभी झुके नहीं। अनुचित सिद्धान्तों से समझौता न करने के अनेक उदाहरणों और घटनाओं से आपका जीवन भरा पड़ा है। आपके पिता श्री मथुरा प्रसाद टण्डन- आर्य समाज के सिद्धान्तों के अनुयायी थे तथा वर्षों तक आर्य समाज बहराइच के विभिन्न पदों को सुशोभित करते रहे थे। श्री वीरेन्द्र ने भी अपने पिता के चरण चिन्हों पर चलते हुए वैदिक विचारों के अनुरूप अपने तीन पुत्रों के संस्कार सम्पन्न किये; जिसमें आपकी सहधर्मिणी श्रीमती नीलिमा टण्डन का पूर्ण योगदान रहा। श्रीमती नीलिमा महिला आर्य समाज की 14 वर्षों तक प्रधान रहीं तथा उन्होंने अनेक नारी उत्थान के कार्यक्रमों का विधिवत् संचालन किया। श्री वीरेन्द्र ने लगभग 14 वर्षों तक आर्य समाज बहराइच के प्रधान तथा आर्य कन्या इंटर कालेज बहराइच के प्रबंधक के रूप में कुशलतापूर्वक कार्य किया। इस दौरान वे निरन्तर जनपद के विभिन्न सामाजिक और शैक्षिक कार्यक्रमों का संचालन भी करत रहे।

सेवानिवृत्ति के पश्चात् 85 वर्षीय श्री वीरेन्द्र जी की सक्रियता में अभी भी कोई कमी नहीं आई है। स्वाध्याय, सत्संग, अग्निहोत्र में निरन्तर दिलचस्पी लेते रहते हैं। विगत आठ वर्षों से आप 'आर्य लोक वार्ता' का नियमित स्वाध्याय करते हैं तथा होता (ऋत्विक) सदस्य के रूप में योगदान करते हैं। आपके स्वास्थ्य एवं दीर्घ जीवन के लिए शताधिक कामनाएँ!

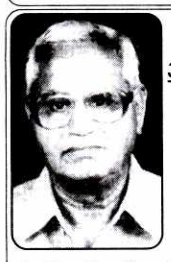

होता सदस्य परिचय-46

आत्मकथ्य

## मैं बहुत भाग्यशाली हूँ

-नरदेव आर्य

मैं बहुत भाग्यशाली हूँ जो मेरे माता पिता ने मुझे गुरुकुल में संस्कृत की दीक्षा दिलाई, यद्यपि मुझें गुरुकुल से निकल कर इसके लिए कष्ट उठाने पड़े। क्योंकि जब मैं गुरुकुल से निकला, तो इस देश में अपनी मातृभाषा को सभी लोग भूलते जा रहे थे। लार्ड मेकाले के उद्देश्यों पर लोग चलने लगे थे, संस्कृत को कोई पूछता नहीं था, उस पर गुरुकुल में आर्ष पाठविधि के अनुसार उनकी अपनी परीक्षायें होती थीं जिनकी कोई पूछ नहीं होती थी।

मैंने प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली में पाई, इसके बाद मैंने बनारस काशी विश्वविद्यालय की परीक्षा पास की, जिसके लिए मुझे कुछ दिन महाविद्यालय ज्वालापुर में रहना पड़ा, वहाँ मैंने सम्पूर्ण मध्यमा पास की। परन्तु उससे भी कुछ होने वाला नहीं था तब मैंने अंग्रेजी का अध्ययन आरम्भ किया, और दो वर्षों में हाई स्कूल परीक्षा उत्तीर्ण की और उसके दस महीने बाद ही मेरी नौकरी रेलवे विभाग में लग गई।

37 वर्ष रेलवे में नौकरी करने के बाद मैंने एल.डी.ए.कालोनी, कानपुर रोड, लखनऊ पर अपना मकान बनवाया। इससे पूर्व मैं आर्य समाज आदर्श नगर से संबद्ध था। उस समय वहाँ आर्य समाज नहीं थी, वहीं एक सज्जन रहते थे उन्होंने एक छोटा सा प्लाट आर्य समाज को दे दिया, और आर्य समाज का भवन बनना आरम्भ हो गया।

1988 में सेवानिवृत्ति के पश्चात् मैं अपने एल.डी.ए.कालोनी स्थित आवास पर आ गया। यहाँ आर्य समाज नहीं था। परिवारों में यज्ञ होते थे। यहाँ मैंने कुछ लोगों से मिलकर आर्य समाज की स्थापना की। बाद में श्री आनन्द कुमार भण्डारी जी तथा ओम प्रकाश सहगल जी ने अपने परिश्रम से आर्य समाज का निर्माण कराया, जो आजकल मूर्त्तरूप से विद्यमान है और सुचारु रूप से चल रहा है। अभी कुछ दिन पूर्व मैंने अपनी पत्नी के देहावसान के उपरान्त उनकी यादगार में एक कमरा और बनवा दिया है।

अपनी पत्नी के मरणोपरान्त मैंने अपना मकान बेंच दिया, जिसमें एक कमरा आर्य समाज में बनवा दिया तथा शेष धनराशि बच्चों में बाँट दी है। अब मैं सभी बच्चों के पास रहता हूँ, अभी कई महीनों से मैं भिवानी (हरियाणा) में अपने पुत्र के साथ हूँ।

# आर्य्य लोक वार्ता

## 'ऋत्विक्-मंडल'

(प्रतिवर्ष १२०० रु. या अधिक सहयोगकर्त्ता)

माता लीलावती आर्यभिक्षु परोपकारिणी न्यास, ज्वालापुर, **हरिद्वार**; विद्यासागर फाउण्डेशन, **मेरठ**; अम्बिका प्रसाद एडवोकेट, **लखनऊ;** आनन्द कुमार आर्य, **कोलकाता**; श्रीमती वीना उतरेजा, राजाजीपुरम, **लखनऊ;** पाल प्रवीण, अलीगंज, **लखनऊ**; श्रीमती कमलेश पाल, अलीगंज, **लखनऊ;** श्रीमती वीना कटियार, **फर्रूखाबाद**; श्रीमती प्रमोद कुमारी, अलीगंज, **लखनऊ;** जगदीश खत्री, **लखनऊ**; ओजोमित्र शास्त्री, महावीरगंज, **लखनऊ**; अभिषेक, अलीगंज, **लखनऊ;** श्रीमती गीतांजलि, अलीगंज, **लखनऊ;** श्रीमती मिनी स्वरूप, **नई दिल्ली**; कर्नल पाल प्रमोद, **मेरठ**; अरविन्द कुमार, आर्कीटेक्ट, **लखनऊ;** श्रीमती शालिनी कुमार, आर्कीटेक्ट, **लखनऊ;** श्रीमती नीरजा सिंह, प्रधानाचार्या, टाण्डा, **अम्बेडकरनगर;** श्रीमती मधुर भंडारी, **नई दिल्ली;** रमेश चन्द्र त्यागी, **लखनऊ;** ओमप्रकाश सेवक, **लखनऊ;** प्रो.आनन्द वैद्य, **लखनऊ;** पीयूष गुप्त, **सिंगापुर;** श्री रमनलाल अग्रवाल, नजीराबाद, **लखनऊ;** श्रीमती प्रकाश अग्रवाल, **बरेली;** कृष्ण स्वरूप चौधरी, गोमती नगर, **लखनऊ;** श्रीमती सुन्दरी दरियानी, **लखनऊ;** ले.कर्नल चन्द्रमोहन गुप्त, **लखनऊ;** डॉ.सी. वी.पाण्डेय, सर्वोदय नगर, **लखनऊ;** अखिल मित्र शास्त्री, महावीरगंज, **लखनऊ;** श्रीमती प्रमिला पाल, मवाना, **मेरठ;** निशीथ कंसल, विवेकानन्दपुरी, **लखनऊ;** दीपक कुमार दर्शन, अमीनाबाद **लखनऊ;** बी.एन.टण्डन, **बहराइच;** अनूप टण्डन, **मेरठ;** श्रीमती कुसुम वर्मा, इन्दिरा नगर, **लखनऊ;** वेद प्रकाश बटुक, **मेरठ;** सतपाल महाजन, **गुड़गाँव;** प्रणव श्रीवास्तव, **अहमदाबाद;** नरेन्द्र भूषण, जानकीपुरम, **लखनऊ;** आर. सी. यादव, सत्या क्लीनिक, इन्दिरा नगर, **लखनऊ;** इं.प्रेमचंद, गोविन्द विहार, **लखनऊ;** चौधरी रणवीर सिंह, प्रधान, आर्य समाज, **सीतापुर;** श्रीमती मंजू रेलन, गोमती नगर, **लखनऊ;** श्री कृष्ण सिंह, अलीगंज, **लखनऊ;** श्रीमती मनीषा त्रिवेदी, **दुबई;** कौशल किशोर श्रीवास्तव, नया तिलक नगर, **लखनऊ;** अर्जुनदेव चढ्ढा, कोटा, **राजस्थान;** नरसिंह पाल एडवोकेट, राजीव नगर, **लखनऊ;** नरदेव आर्य, एल.डी.ए.कालोनी, **लखनऊ;**।

www.thearyasamaj.org


# काव्यायन

## दुर्गा शक्ति

❑गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

दृढ़ लोक प्रशासक दुर्गा है, निज कर्त्तव्यों के प्रति सचेत।
कर रहे नदी की कोख रिक्त, कुछ रेत-खनन के महाप्रेत।।

वे धन-पशु-बल के अनुयायी, नेताओं के भी सम्बन्धी।
कर दिया निलम्बित 'दुर्गा' को, प्रभुतावश राजनीति अंधी।।

मिथ्या आरोप लगा करके, नेतृत्व कर रहा प्रकट क्रोध।
सत्ता का अहं चूर होगा, यदि जागा जनता का विरोध।।

फिर जागी दुर्गा-शक्ति प्रबल, फिर आया युवजन में उबाल।
सर्पाहुति यज्ञ न पूर्ण हुई, कुर्सी से चिपका महाव्याल।।

कैसे मिल पाए न्याय भला, यदि शासक हो भ्रष्टाचारी।
बतलाओ गौतमबुद्ध नगर! क्यों सता रहे अत्याचारी।।

आपराध यही क्या दुर्गा का ! रुकवाया उसने रेत-खनन।
राजस्व जुटाया लाखों में, किस मर्यादा का हुआ हनन।।

होता है पर्यावरण नष्ट, की जाती हत्या नदियों की।
शासन-सत्ता, धन लोलुपता, अपराधी होगी सदियों की।।

मोहन वंशी की तान छोड़, अब पांचजन्य का करो घोष।
अन्यथा स्वयं के रंगे हाथ, होने का सिर लो महादोष।।

देश के साथ विश्वासघात, करने वालों कुर्सी छोड़ो।
जागो हे युवा-शक्ति जागो, अन्याय-तिमिर कारा तोड़ो।।

–117, आदिलनगर, लखनऊ–22

## वतन को नमन

❑नरेन्द्र भूषण

अपनी जमीं को और आसमान को नमन
पाला है हमें उस वतन महान को नमन।

अहिंसा व सत्य की मशाल हाथ में लिये
दीन दुखी निर्बलों को साथ में लिये
खुद कष्ट सहे और का करते रहे जतन
'बापू' तुम्हें नमन, तेरी मशाल को नमन।

आजाद कराऊँगा कहा खून दो मुझे
इस दासता से मुक्त हों, जुनून दो मुझे
'आजाद हिन्द फौज' का जिसने किया गठन
उस 'सुभाष' को नमन, भरे जुनून को नमन।

करते रहे वे पार खइयां भरी नदी
चोटी पहाड़ की भले हो बर्फ से लदी
शहीद थे कितने जिन्हें मिला नहीं कफन
उनके शौर्य को नमन, उत्सर्ग को नमन।

'लाम' पे जवान हैं, हिन्दू न मुसलमान हैं
दे रहे देश पर बराबरी से जान हैं
धर्मों से परे उनका एक धर्म है 'वतन'
उनके धर्म को नमन, श्रेष्ठ मर्म को नमन।

–सी–2/182, से–एफ, जानकीपुरम, लखनऊ

## कालजयी गीत

## पुरवा जो डोल गई



❑डॉ. शिवबहादुर सिंह भदौरिया

*(हिन्दी-गीतों में प्रकृति और लोकसंस्कृति को नई पहचान देने वाले गीतकार श्री शिवबहादुर सिंह भदौरिया का पिछले दिनों निधन हो गया। श्रद्धांजलि के तौर पर प्रस्तुत है- उनका अत्यन्त लोकप्रिय गीत -सं.)*

पुरवा जो डोल गई

घटा घटा आँगन में जूड़े से खोल गई
बूँदों का लहरा दीवारों को चूम गया
मेरा मन सावन की गलियों में झूम गया
श्याम रंग परियों से अंबर है घिरा हुआ
घर को फिर लौट चला बरसों का फिरा हुआ
मइया के मंदिर में
अम्मा की मानी हुई
डुग डुग डुग डुग डुग बधइया फिर बोल गई।

बरगद की जड़ें पकड़ चरवाहे झूल रहे
बिरहा की तानों में बिरहा सब भूल रहे
अगली सहालक तक ब्याहों की बात टली
बात बहुत छोटी पर बहुतों को बहुत खली
नीम तले चौरा पर
मीरा की बार बार
गुड़ियों के ब्याह वाली चर्चा रस घोल गई।

खनक चूड़ियों की सुनी मेंहदी के पातों ने
कलियों पे रंग फेरा मालिन की बातों ने
धानों के खेतों में गीतों का पहरा है
चिड़ियों की आँखों में ममता का सेहरा है
नदिया से उमक उमक
मछली वह छमक छमक
पानी की चूनर को दुनिया से मोल गई।

झूले के झुमके हैं शाखों के कानों में
शबनम की फिसलन है केले की रानों में
ज्वार और अरहर की हरी हरी सारी है
सनई से फूलों का गोटा किनारी है
गाँवों की रौनक है
मेहनत की बाहों में
धोबिन भी पाटे पर हइया छू बोल गई।

पुरवा जो डोल गई

## उत्तराखण्ड त्रासदी

❑डॉ.मिर्ज़ा हसन 'नासिर'

दूर-दूर धामों से थे आये लोग चार धाम,
कई दिन ऊँचे-ऊँचे पर्वतों पे चलके।
क्रुद्ध हुई प्रकृति अचानक क्यों भक्तों पर,
ज़ोर-ज़ोर वर्षा हुई, धारे बहे जल के।।
लोग बहे पशु बहे घर बहे अगणित,
मार्ग हुए टूट-टूट चूर-चूर गल के।
चारों धामों में प्रलयंकर बाढ़ आई ऐसी,
देखके नयन किसके थे नहीं छलके।।

–जी–02, लोरपुर रेज़ीडेन्सी, डॉ.बैजनाथ रोड, न्यू हैदराबाद, लखनऊ

## शारदे !

❑दिनेश मिश्र 'राही'

नित प्रज्ज्वल हो नवजोति अखंड
प्रचंड प्रभुत्व दिखे जग में।
जग में जलि दीप प्रकाश भरैं
तम दूर भगै, सुख हो मग में।
मग में सुखशान्ति की वेलि फरै
शुचि भाव सदा रत हो जग में।
रग में मन में तन में माँ रमे
घुंघरू खुशियों के बजे पग में।।

धर दे सिर पे कर मातु सदा
किरपा-बरसा की झड़ी झर दे।
झर दे स्वर तान सदा उर में
स्वर-पुंज की कंज कली कर दे।
कर दे कर में, स्वर दे वर दे
स्वर-माल की एक हमें लर दे।
लर दे, बल दे, बल में बल दे
मजबूत उड़ान भरे पर दे।

–अम्बिका पुरम, आनन्द नगर, सीतापुर

## दीवार गढ़ने न देना है !

❑डॉ. कैलाश निगम

एक ओर भूखे पेट,
एक ओर धन्ना सेठ
बढ़ती है खाई,
इसे बढ़ने न देना है।
साँप आसतीन के हैं,
डस चुके कई बार
इनका ज़हर और
चढ़ने न देना है।
स्वाभिमान लूटने की
साजिश रचाने वाली
जीभ मुँह से ही
अब कढ़ने न देना है।
शिल्पकार जातिवादी
आ गये हैं आँगन में
कोई भी दीवार
और गढ़ने न देना है।

–4/522, विवेक खण्ड, गोमतीनगर, लखनऊ

## हर्ष-चतुष्पदी

## पारिजात-विख्यात

❑बाँके बिहारी 'हर्ष'

कभी महदेवा गया अवधेश संग, अब-
ख्याल आता घाघरा का तट मुझे।
शारदा उद्गम कहाँ? मालूम नहीं-
शारदा कैनाल की महसूस है आहट मुझे।।

मैं न वैदिक या अवैदिक मैं महज जिज्ञासु हूँ।
मुझे जाने नया; परिचय ज्ञात भी अज्ञात भी।
स्वप्नवत है रामनगर महदेवा मुझे-
पारिजात विटप जहाँ का विश्व में विख्यात है।।

–अवध मोटर वर्क्स, सिविल लाइन्स, फैजाबाद

## वतन टूटते देखा है

❑उमेश 'राही'

जब कभी किसी को भूख से मरते देखा है।
टुकड़ा-टुकड़ा अपना वतन टूटते देखा है।।

तमाम उम्र जो जागरण का संदेश देते रहे।
देश के मंच पर मैंने उन्हें ऊंघते देखा है।।

जिन्दगी भर तुमने जिस कली को दबाये रखा।
उस कली से ही इन्किलाब फूटते देखा है।।

दिन भर वो जो शराब के खिलाफ बोलते रहे।
शाम उनको ही मयखाने में डूबते देखा है।।

जो लोग 'राही' को कहते हैं भटका हुआ।
उनको ही मैंने अक्सर राह पूछते देखा है।।

–'कला–सदन', 363ए/4, मोती नगर, लखनऊ

## राजस्थान-समाचार

### विकलांग युवक-युवती विवाह सम्पन्न

कोटा, २६ जून। आर्य समाज विज्ञान नगर के सत्संग हाल में एक विकलांग युवक युवती का विवाह संस्कार कराया गया। भावनगर, गुजरात निवासी पोस्ट ग्रेजुएट विकलांग युवक जगदीश लालवानी तथा सुश्री जयवन्ती पंजवानी, एम. ए. (अध्ययनरत) का विवाह संस्कार पं.बिरधी चन्द्र शास्त्री के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चढ्ढा ने नव दम्पति को सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया तथा आर्य समाज विज्ञान नगर के प्रधान जे.एस.दुबे व डॉ.एल.के.दिवाकर ने वैदिक साहित्य भेंट किया। श्री चढ्ढा ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि असक्षम से सक्षम बनकर अन्यों को शिक्षित व स्वावलम्बी बनने को प्रोत्साहित करें। जरूरत मन्द कमजोर आय वर्ग के बच्चों को निःशुल्क शिक्षा दें।

नव दम्पति व उनके परिजनों ने कहा कि आर्य समाज की व्यवस्था, व्यवहार व पूर्ण वैदिक विवाह पद्धति से हम प्रसन्न हैं। आज आर्य समाज के प्रवचन से हममें समाज सेवा की नई ऊर्जा उत्पन्न हुई है। इस अवसर पर नव युगल के दोनों ओर के पारिवारिक जन स्त्री पुरुष उपस्थित थे। *(राकेश चढ्ढा, मंत्री, आ.स.विज्ञान*

## वार्षिक निर्वाचन

### आर्यसमाज विज्ञाननगर कोटा

आर्य समाज, विज्ञान नगर, कोटा का वार्षिक निर्वाचन २३.०६.१३ को पर्यवेक्षक श्री अर्जुनदेव चढ्ढा ने सम्पन्न कराया जिसमें निम्न पदाधिकारी चुने गये-

| | |
|---|---|
| श्री जे. एस. दुबे | प्रधान |
| श्री अशोक अग्निहोत्री | उपप्रधान |
| श्रीमती अनिता शर्मा | उपप्रधान |
| श्री राकेश चढ्ढा | मंत्री |
| श्री अनिल दुबे | उप मंत्री |
| श्री भगवान पाण्डेय | उप मंत्री |
| श्री कैलाश रस्तोगी | कोषाध्यक्ष |
| श्री दिनेश शर्मा | पुस्तकाध्यक्ष |

अंतरंग सदस्य-

सर्वश्री डा. के.एल.दिवाकर, अर्जुनदेव चढ्ढा, सुमेश कुमार गांधी, महेन्द्र कुमार रस्तोगी, मनोहर लाल शर्मा, महेन्द्र पाल शर्मा, सतीश वसिष्ठ, श्रीमती पूनम चढ्ढा, श्रीमती दीपा दुबे।

*(राकेश चढ्ढा, मंत्री)*

### आर्यसमाज तलवंडी

आर्य समाज, तलवंडी का वार्षिक निर्वाचन २६.०६.१३ को सम्पन्न हुआ जिसमें निम्न पदाधिकारी चुने गये-

| | |
|---|---|
| श्री रघुराज सिंह कर्णावत | प्रधान |
| श्री श्रीचन्द गुप्ता | उपप्रधान |
| श्रीमती सुनीता आर्य | उपप्रधान |
| श्री भैरोलाल शर्मा | मंत्री |
| श्री अग्निमित्र आर्य | उप मंत्री |
| श्रीमती सुमनबाला सक्सेना | उप मंत्री |
| श्री शिवदयाल गुप्ता | कोषाध्यक्ष |
| श्री राधा वल्लभ राठौर | पुस्तकाध्यक्ष |
| श्री गुमान सिंह आर्य –आर्यवीरदल अधिष्ठाता | |

कार्यकारिणी सदस्य- सर्वश्री रामप्रसाद याज्ञिक, मूलचन्द आर्य, रामकुमार, लालचन्द आर्य, एच.पी.माथुर, श्रीमती प्रमिला गुप्ता, कुलदीप आर्य, सुखराज सोनी, योगराज कुमरा, कुमार खुराना, धर्मवीर सिंह, रघुनन्दन त्रिवेदी, श्रीमती उषा भटनागर।

## वाराणसी-समाचार

### पाल प्रवीण सम्मानित

यूनियन बैंक आफ इण्डिया के सेवानिवृत्त अधिकारियों का एक विशेष सम्मेलन दिनांक २८.०७.१३ को वाराणसी में आयोजित हुआ जिसमें देश के विभिन्न भागों से आये हुए सेवानिवृत्त अधिकारियों ने भाग लिया। इस सम्मेलन में श्री पाल प्रवीण को उनकी विशिष्ट सेवाओं के सन्दर्भ में सम्मानित किया गया। बधाई!

## फैजाबाद-समाचार

### आर्य समाज सुभाष नगर का वार्षिक उत्सव

आर्य समाज सुभाष नगर, फैजाबाद का ३६वाँ वार्षिकोत्सव २० से २४ अक्टूबर २०१३ तक समारोह पूर्वक मनाया जायगा। वार्षिकोत्सव में वेद प्रचार हेतु आर्य जगत की प्रख्यात विदुषी आचार्या अन्नपूर्णा शास्त्री तथा उनकी शिष्यायें (देहरादून), आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय (दिल्ली), डॉ.ऋचा योगमयी (बिहार) तथा पं.भानुप्रकाश आर्य (बरेली) को आमंत्रित किया गया है। प्रतिदिन प्रातः ८ बजे से १ बजे तक यज्ञ, भजन एवं वेदोपदेश तथा सायं ६ बजे से १०.३०बजे तक भजन व्याख्यान होंगे। इसके अलावा ब्र.नरेन्द्र द्वारा प्रातः एवं सायंकाल ध्यान-योग प्रशिक्षण प्रदान किया जायगा। साथ ही प्रातः १०.३० से रात्रि ६.३० तक नगर के विभिन्न स्थानों पर वैदिक साहित्य प्रदर्शनी भी लगाई जायगी। आर्य समाज के मंत्री श्री राकेश कुमार आर्य ने जनता से अपील की है कि वे भारी संख्या में उत्सव में भाग लेकर राष्ट्रनिर्माण में अपना योगदान सुनिश्चित करें। *(बाँके बिहारी 'हर्ष')*

### रुद्रावली समाचार

आर्य समाज रुद्रावली जनपद फैजाबाद के प्रधान श्री सुभाष चन्द्र आर्य की धर्मपत्नी श्रीमती सोनादेवी का असामयिक निधन दि.०१.०७.१३ को लखनऊ पी. जी.आई. में हो गया। उनका अन्त्येष्टि संस्कार रुदौली नगर के भैरवधाम श्मशान घाट पर पूर्ण वैदिक रीति से आचार्य राजीव कुमार गर्ग द्वारा सम्पन्न कराया गया जिसमें आर्य समाज के पदाधिकारी-सतीन्द्र प्रकाश शास्त्री, बृजेश कुमार, प्रेमहरि आर्य, हरिशंकर आर्य तथा विधायक श्री रामचन्द्र यादव, नगरपालिका अध्यक्ष श्री अशोक कुमार कसौंधन सहित बड़ी संख्या में नागरिक व पारिवारिक जन उपस्थित थे। दिनांक ५ जुलाई को सुभाष जी के रामनगर कालोनी स्थित आवास पर शान्ति यज्ञ सम्पन्न हुआ तथा १३ जुलाई को आर्य समाज मन्दिर रुद्रावली में एक शोक सभा आयोजित की गई जिसमें दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमेश्वर से प्रार्थना की गई तथा शोक प्रस्ताव पारित किया गया। *(सतीन्द्र प्रकाश शास्त्री, मंत्री)*

## हरदोई-समाचार

### आर्यसमाज सण्डीला

आर्य समाज सण्डीला द्वारा आयोजित वेद प्रचार सप्ताह के समापन दिवस पर 'आर्य लोक वार्ता' के प्रधान सम्पादक डॉ. वेद प्रकाश आर्य ने कहा कि श्रीकृष्ण को ही यह श्रेय प्राप्त है कि उन्होंने कंस और जरासंध जैसे अत्याचारी राजाओं के शासन को समाप्त कर भारतीय गणतंत्र की स्थापना की तथा युधिष्ठिर को राजपद पर प्रतिष्ठित किया। मुगलों और अंग्रेजों द्वारा विखंडित भारत को श्रीकृष्ण के ही पदचिन्हों पर चलते हुए आधुनिक युग में सरदार वल्लभभाई पटेल ने भारतीय गणतंत्र को पुनः संगठित करने का श्रेय प्राप्त किया।

### पुष्पमित्र शास्त्री सम्मानित

आर्य समाज सण्डीला के वेद प्रचार सप्ताह के समापन के अवसर पर श्री गंगाराम गुप्त के आवास पर आयोजित यज्ञ एवं सत्संग समारोह में वैदिक विद्वान् श्री पुष्पमित्र शास्त्री को सम्मानित किया गया। समारोह डॉ.सत्य प्रकाश, प्रधान आर्यसमाज की अध्यक्षता तथा यज्ञ श्री अवनीश गुप्त तथा श्री गंगाराम गुप्त के सपरिवार संयोजन में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर आर्य समाज से सम्बद्ध श्री ज्ञानचंद्र, परमेश्वरदीन, श्री राम जी(मंत्री), ओमप्रकाश पाण्डे तथा सण्डीला के अनेक संभ्रान्त नर नारी मौजूद थे।

## लखनऊ-समाचार

### आर्य समाज गोमतीनगर

आर्य समाज, गोमती नगर का वार्षिक निर्वाचन १७.०७.१३ को सम्पन्न हुआ जिसमें निम्न पदाधिकारी चुने गये-

| | |
|---|---|
| श्री मनोज कुमार मिश्र | प्रधान |
| डा. गुलशन राय | उपप्रधान |
| श्री अशोक कुमार साहू | मंत्री |
| श्री लालजी मौर्य | उप मंत्री |
| श्री वासुदेव वर्मा | कोषाध्यक्ष |
| श्री रामहेत वर्मा | संगठन मंत्री |
| श्री किशोर कुमार त्रिपाठी | प्रचार मंत्री |
| श्री बालगोविन्द पालीवाल | लेखापरीक्षक |
| श्री सियाराम कुशवाहा | पुरोहित |

कार्यकारिणी सदस्य-

सर्वश्री मनोहर लाल, राम प्रसाद श्रीवास्तव, श्रीमती जया पंत, श्रीमती मालती देवी।

*(मनोज कुमार मिश्र, प्रधान)*

### आर्य समाज लालबाग

आर्य समाज लालबाग का वार्षिक निर्वाचन ०४.०८.१३ को सम्पन्न हुआ जिसमें निम्न पदाधिकारी निर्वाचित हुए -

| | |
|---|---|
| श्री मनीष आर्य | प्रधान |
| श्रीमती करुणा मोहन | उपप्रधान |
| डॉ. मोहनलाल अग्रवाल | मंत्री |
| श्री सुनील मेहरोत्रा | उप मंत्री |
| श्री धीरेन्द्र कोहली | कोषाध्यक्ष |
| श्रीमती शोभा अग्रवाल | पुस्तकाध्यक्ष |
| श्री योगेश मोहन | लेखापरीक्षक |

आर्य प्रतिनिधि सभा हेतु प्रतिनिधि–श्री योगेश मोहन, आर्य उपप्रतिनिधि सभा लखनऊ हेतु– श्री मनीष आर्य एवं डॉ.मोहनलाल अग्रवाल।

*(नवनीत निगम, निर्वा.अधि.)*

### महर्षि का बृहद् चित्र

श्री आनन्द कुमार भण्डारी, पुरी सर्जिकल के पीछे, सुभाष नगर, आलम बाग, लखनऊ (०५२२-२४७१३३४) ने स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज का विशाल एवं भव्य चित्र [3'x4'] साइज में तैयार किया है। जो सज्जन इस सुन्दर विशाल चित्र को लेना चाहें- ३००रु. मूल्य देकर(आर्थिक रूप में असमर्थ हैं तो निःशुल्क भी) प्राप्त कर सकते हैं।

इच्छुक व्यक्ति उपर्युक्त पते पर सम्पर्क स्थापित करें। *(लोकहितार्थ प्रकाशित)*

## वैवाहिक-समाचार

### ऋतंभरा-मयंक परिणय

सुश्री ऋतंभरा (सुपुत्री श्री अरविन्द पाण्डेय, प्रधान, आर्य समाज गायत्री विहार एवं कार्यालय सचिव, जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा, राजस्थान) का पाणिग्रहण संस्कार चि.मयंक के साथ वैदिक विधि से आर्य समाज रामपुरा कोटा के मंत्री श्री रमेश आर्य के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर ऋतंभरा के दादाजी पं.सत्यदेव वानप्रस्थी, जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा के प्रधान अर्जुन देव चढ्ढा, मंत्री कैलाश बाहेती, कोषाध्यक्ष जे.एस.दुबे एवं महर्षि दयानन्द वेद प्रचार समिति के संस्थापक प्रधान रामप्रसाद याज्ञिक सहित आर्य जनों ने वर वधू को आशीर्वाद प्रदान किया तथा वैवाहिक जीवन के लिए मंगलकामना की।

## लखनऊ-समाचार

### स्व.अष्टभुजा प्रसाद श्रीवास्तव

३१.०७.१३, इन्दिरा नगर, लखनऊ। स्व.अष्टभुजा प्रसाद श्रीवास्तव की पुण्य स्मृति में शान्तियज्ञ वैदिक विधि से सम्पन्न हुआ। श्री श्रीवास्तव(८०) का २६ जुलाई को निधन हो गया था। पुत्र श्री अम्बुजेश्वर प्रसाद ने अपनी सहधर्मिणी श्रीमती पूनम के साथ यज्ञवेदी पर बैठकर आहुतियाँ दीं। यज्ञ में श्री राघवेन्द्र श्रीवास्तव (कनिष्ठ पुत्र), पुत्री सुश्री ललिता एवं कालिन्दी तथा प्रमोद कुमार, विनोद कुमार, अशोक कुमार (बन्धुगण) परिवार सहित शामिल हुए। दूरदराज के संबन्धियों के अलावा नगरवासियों ने भी बड़ी संख्या में यज्ञ में शामिल होकर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। यज्ञ के आचार्य डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने जीवात्मा तथा परमात्मा के संबन्धों पर प्रवचन दिया जिसका श्रोताओं पर विशेष प्रभाव देखा गया। कार्यक्रम का संयोजन श्री विष्णु श्रीवास्तव, एडवोकेट, सर्वोदय नगर, लखनऊ ने किया।

### स्व.श्याम सनेही

२५.०७.१३, ए-११०३/१०, इन्दिरा नगर, लखनऊ। श्री नागेन्द्र सिंह के पूज्य पिता श्री श्याम सनेही ने ८८ वर्ष की आयु में अपनी जीवन लीला पूर्ण की। आपकी स्मृति में शान्तियज्ञ का आयोजन आचार्य डॉ.वेद प्रकाश जी के निर्देशन में हुआ; जिसमें श्री महीन्द्र नाथ सिंह तथा श्रीमती शैलेन्द्र ने यजमान का आसन ग्रहण किया। अन्य पारिवारिक सदस्यों- सुश्री निशा, तनू, नितिन तथा विवेक ने श्रद्धापूर्वक यज्ञ में आहुति दी। कानपुर से आये हुए परिवार के सदस्यगण तथा देवियों ने भी यज्ञ में भाग लिया। दो मिनट मौन रहकर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। *(नागेन्द्र नाथ सिंह-संयोजक)*

### 'सोम' रहित हुआ गोमती नगर

–रमेश चन्द्र त्यागी / शेफाली शुक्ल–



वर्षों से अपने सौम्य, शालीन एवं गरिमापूर्ण व्यक्तित्व से गोमती नगर के सामाजिक-शैक्षिक जीवन को ज्योतित करने वाले केन्द्रीय विद्यालय के सेवा निवृत्त प्राचार्य श्री सोमदत्त शुक्ल का ८१ वर्ष की आयु में ०६.०८.२०१३ को निधन हो गया। श्री शुक्ल के निधन पर शिक्षा और संस्कृति से जुड़े हुए अनेक व्यक्तियों ने गहरा दुःख प्रकट किया है। भारतीय विद्यालय इंटर कालेज की प्रधानाचार्या श्रीमती मालती त्यागी ने कहा है कि श्री शुक्ल के चले जाने से गोमती नगर के सामाजिक जीवन में रिक्तता आ गई है।

आचार्य श्री सोमदत्त शुक्ल का जन्म १५ नवम्बर, १६३२ को लक्ष्मणपुर मिश्रान जिला कानपुर देहात में एक साधारण परिवार में हुआ था। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा गाँव की पाठशाला में तथा माध्यमिक शिक्षा फर्रूखाबाद में हुई। तत्पश्चात उन्होंने शास्त्री व आचार्य की उपाधियाँ अर्जित कीं। कानपुर देहात के बैरी इंटर कालेज से अध्यापन कार्य आरम्भ किया। पिता महावीर प्रसाद शुक्ल के देहान्त के बाद आपने गाँव छोड़ दिया और पंचमठी कानपुर चकेरी, दिल्ली से स्थानान्तरित होते हुए १६७५ में फतेहगढ़ केन्द्रीय विद्यालय में प्रिंसिपल के रूप में नियुक्त हुए। आपका स्थानान्तरण गोमती नगर केन्द्रीय विद्यालय के प्राचार्य के रूप में १६८७ में हुआ और यहीं से १६६२ में सेवानिवृत्त होने के बाद गोमती नगर में ही निज आवास का निर्माण कराया। अध्यापन के अतिरिक्त उनकी लेखन में भी विशेष रुचि रही। 'कृति प्रकाशन' से सम्बद्ध रहते हुए उन्होंने हिन्दी व संस्कृत की कुछ पुस्तकें भी लिखीं जो विद्यालयों में पाठ्यक्रम में चल रही हैं- जैसे 'मुग्धा', 'मेधा', 'कलिका' (सभी भाग १ से ८ तक)। आप कुशल वक्ता होने के साथ-साथ एक सहृदय व्यक्ति भी थे। जीवन के अंतिम समय पूरी तन्मयता व जीवन्तता से अपने कार्य साधना में लगे रहे।

### विक्रय केन्द्र का शुभारम्भ

पतंजलि योग पीठ हरिद्वार के लोकप्रिय उत्पादों (प्रोडक्ट्स) के एक भव्य बिक्री केन्द्र का- ६४७ एफ./२३०, सेक्टर-आई, शिव विहार कालोनी, जानकी पुरम में वैदिक यज्ञ के साथ शुभारम्भ हुआ। यह बिक्री केन्द्र श्री सुरेश चन्द्र तिवारी द्वारा संचालित किया जा रहा है। क्षेत्र के अनेक गण्यमान नर- नारी वैदिक विद्वान डॉ. वेद प्रकाश आर्य के आचार्यत्व में सम्पन्न यज्ञ में शामिल हुए।

इस अवसर पर उपस्थित लोगों में श्री सुरेश चन्द्र तिवारी तथा श्रीमती सुशीला तिवारी(यजमान), श्री दिवाकर तिवारी, सी.ए.; श्रीमती सुप्रिया तिवारी, चन्द्रभान सिंह, ध्रुव कुमार पांडेय, श्रीमती किरन पांडे, अरविन्द आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

लखनऊ-समाचार

# वेद प्रचार सप्ताह एवं श्रावणी उपाकर्म

## आर्य समाज आदर्श नगर

आर्य समाज आदर्श नगर के तत्वावधान में ३ अगस्त से १८ अगस्त २०१३ तक अनवरत वेद प्रचार कार्यक्रमों की सुदृढ़ शृंखला के निर्माण का सुखद समाचार प्राप्त हुआ है। ३ से ६ अगस्त तक प्रातः ५ बजे से ६ बजे तक प्रभातफेरी द्वारा 'ओ३म् ध्वजा को लेकर कर में, गूँजे वेद ध्वनि घर घर में' के उद्‌घोष से जन जागरण का शंखनाद किया गया तथा ७ से १४ अगस्त तक प्रातःकालीन तथा सायंकालीन उभय सत्रों में अथर्वपारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ। १५ से १८ अगस्त तक यज्ञ के साथ ही श्रावणी उपाकर्म एवं वेदोपदेश तथा भजनों का आकर्षक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर अपने विचारों से गौरव प्रदान किया- पं. यज्ञदेव याज्ञिक (राजस्थान) एवं श्रीमती सुदेश आर्या ने। यज्ञ के संचालन में आचार्य सन्तोष कुमार वेदालंकार तथा आचार्या प्रतिज्ञा आर्या की प्रमुख भूमिका रही तथा दो दिनों के लिए आचार्या सरस्वती शास्त्री का योगदान भी सराहनीय रहा।

रविवार १८ अगस्त को समापन दिवस पर जहाँ ऋषि लंगर की सुरुचिपूर्ण व्यवस्था की गई थी; वहाँ विद्वानों के सम्मान का भी कार्यक्रम कम आकर्षक नहीं था। अन्य विद्वानों के साथ ही- विशेष रूप में आर्य समाज आदर्श नगर के प्रतिष्ठापक पं. मदनमोहन जोशी का अभिनंदन आर्यजनों में विशेष उल्लास एवं उत्साह का संचार करने में सफल रहा।

कार्यक्रम की अध्यक्षता की आर्य समाज के प्रधान श्री अम्बरीश कुमार अग्रवाल ने तथा सदैव की भांति तन्मय कर देने वाला संचालन तथा संयोजन किया श्री सतीश निझावन, मंत्री आर्य समाज ने।

आर्य उपप्रतिनिधि सभा लखनऊ के प्रधान श्री सतीश चन्द्र बिसारिया, मंत्री श्री प्रत्यूषरत्न तथा कोषाध्यक्ष राजीव बत्रा के अलावा- नगर की प्रायः समस्त आर्य समाजों के प्रतिनिधिगण उत्सव में बड़ी संख्या में मौजूद थे। आर्य समाज आदर्श नगर से सम्बद्ध श्रीमती किरन शर्मा- जो सम्प्रति नोएडा में रह रहीं हैं- उत्सव में सम्मिलित होने के लिए विशेष रूप से लखनऊ आ गई थीं। आर्य समाज की व्यवस्था को सुन्दर और सुचारु बनाने की दिशा में एक कदम आगे बढ़ाकर आर्य समाज के दोनों अतिथि कक्षों को ए.सी. की सुविधा से संयुक्त कर दिया गया। श्रीमती किरन शर्मा ने अपने पिताजी की पुण्यस्मृति में आर्य समाज को ८० लीटर की क्षमता का वाटर कूलर प्रदान किया।

## आर्य समाज चन्द्र नगर

आर्य समाज चन्द्र नगर ने इस वर्ष अपना वेद प्रचार सप्ताह २२ से २५ अगस्त २०१३ तक समारोह पूर्वक मनाया। श्रावणी उपाकर्म (रक्षाबंधन) पर्व भी मनाया गया। प्रतिदिन प्रातःकाल यज्ञ आचार्य वेदव्रत अवस्थी तथा पं.अखिलेश लखनवी के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। इस अवधि में प्रख्यात व्याख्याता श्री महेन्द्रपाल आर्य के व्याख्यान तथा अंकित शास्त्री (दिल्ली) के भजनोपदेश हुए। समापन दिवस पर विद्वानों को सम्मानित किया गया तथा ऋषि लंगर (प्रीतिभोज) की अतिसुन्दर और सुचारु व्यवस्था की गई। समारोह में जनपद की आर्य समाजों के प्रतिनिधि गण बड़ी संख्या में मौजूद थे।

श्री अंकित ने जहाँ अपने मधुर स्वरों से नयी नयी धुनों पर गीत गाये, वहीं श्री महेन्द्र पाल आर्य ने देश में फैले हुए अज्ञानमूलक मत-मतान्तरों की समीक्षा की तथा वैदिक धर्म की श्रेष्ठता का प्रतिपादन किया। वेदमंत्रों के साथ कुरान की आयतों के सस्वर पाठ ने जनता के मन में कौतूहल जगाया। आर्य समाज का हॉल तथा परिसर नर-नारियों से भरा हुआ था। सभा की अध्यक्षता श्री जगदीशलाल खत्री, प्रधान आर्यसमाज ने की।

इस अवसर पर श्री ललित मोहन सिंह, पूर्व डी.आई.जी. तथा श्री हूडा जी ने भी अपने विचार व्यक्त किये। आर्य समाज की सेवा में संलग्न अनिल आर्य तथा उनके सहयोगियों को सम्मानित किया गया।

## आर्य समाज हसनगंज पार

आर्य समाज हसनगंज पार (डालीगंज) के तत्वावधान में २८ अगस्त से ४ सितम्बर २०१३ तक वेद प्रचार सप्ताह के अन्तर्गत यज्ञ, वैदिक ध्यान एवं प्रवचन का आयोजन किया गया; जिसमें डॉ.वीरेन्द्र परिव्राजक तथा पं.सन्तोष वेदालंकार के प्रवचन होते रहे। विभिन्न परिवारों में यह कार्यक्रम सायं ६ से ८ बजे तक चलता रहा। जिन परिवारों में वेद प्रचार कार्य सम्पन्न हुआ, वे इस प्रकार हैं- सर्वश्री पाल प्रवीण, योगाश्रम, अलीगंज(२६.०८.१३), कृपा शंकर वर्मा, आशा भवन, बरौलिया(३०.०८.१३), देवेन्द्र नाथ चौधरी, रामाधीन सिंह रोड(३१.०८.१३), सेवक राम, त्रिवेणी नगर(०२.०९.१३), गजेन्द्र सिंह, बंधा रोड, टैगोर मार्ग,(०३.०९.१३), श्री प्रकाश मिश्र, मिश्र गेस्ट हाउस, निकट रेलवे स्टेशन(०४.०९.१३)। दि. २८.०८.१३ तथा ०१.०९.१३ को वेद प्रचार कार्यक्रम आर्य समाज मंदिर में प्रातःकालीन वेला में सम्पन्न हुआ। सभी कार्यक्रमों में जनता की उत्साह वर्धक भागीदारी देखी गई।

## सत्यनारायण वेद प्रचार ट्रस्ट

सत्यनारायण वेदप्रचार ट्रस्ट के तत्वावधान में दिनांक २२ से २८ अगस्त २०१३ तक वेदप्रचार सप्ताह सफलता पूर्वक मनाया गया। २८ अगस्त को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व पर विशेष व्याख्यान श्रीकृष्ण के जीवनादर्शों पर हुआ। सम्पूर्ण उत्सव में आचार्य विश्वव्रत शास्त्री के व्याख्यान के साथ ही श्री आर. के. शर्मा, नवीन कुमार सहगल, रश्मि गुप्त तथा श्रीमती कविता ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। सायं ६ बजे से ८ बजे तक आयोजित कार्यक्रमों की शृंखला का प्रतिदिन यज्ञ से शुभारम्भ हुआ, तत्पश्चात् भजन एवं प्रवचन होते रहे। २२ अगस्त से २८ अगस्त तक क्रमशः श्री देवेन्द्र स्वरूप गुप्त, श्री सुरेश मिश्र, चन्द्र भान सिंह, संतोष कुमार त्रिपाठी, सुरेश चन्द्र मिश्र, अखिलेश मिश्र तथा गुरुकुल प्लाट नं.५, सीता विहार कालोनी में यज्ञ का आयोजन सम्पन्न हुआ। इस अवधि में जिन विषयों पर धर्मचर्चा हुई, वे हैं- यज्ञ योग एवं अध्यात्म, वेदों में मानव जीवन, जन्म और मृत्यु, वैदिक संस्कारों का महत्व, मानवी जीवन में वेदमंत्रों की उपयोगिता, मृत्यु को जीतने का उपाय, वैदिक जीवन के आदर्श श्रीकृष्ण।

# आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह-2013

जन जन के हृदयों को जीवंत, जागृत और सचेष्ट करने के समाजोपयोगी अनुष्ठान में संलग्न वैदिक विचारधारा के प्रतिनिधि पत्र 'आर्य लोक वार्ता' के १६वें वर्ष में प्रवेश के सुअवसर पर 'आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह-२०१३' दिनांक ९ नवम्बर, २०१३ शानिवार को राय उमानाथ बली प्रेक्षागृह, कैसरबाग, लखनऊ में आयोजित करने का निश्चय किया गया है। समारोह में नवीन ऊर्जा का संचार करने हेतु कर्मवीर नेता श्री आनंद कुमार आर्य (प्रधान, आर्य उपप्रतिनिधि सभा बंगाल-आसाम) कोलकाता तथा विदुषी डॉ.निष्ठा विद्यालंकार, कानपुर तथा अन्य गण्यमान अतिथिगण भाग ले रहे हैं।

## मेरठ गौरव प्रियपाल का 103वाँ जन्मदिवस

११.०८.१३, योगाश्रम, अलीगंज।

जीवन ज्योति प्रज्वलित करने वाले मवाना (मेरठ) के प्रख्यात कर्मशील एवं अग्रगण्य श्री प्रियपाल जी का १०३वाँ जन्म दिवस उनके पुत्ररत्न श्री पालप्रवीण के आवास पर वैदिक यज्ञ के आयोजन के साथ मनाया गया। इस अवसर पर वैदिक सत्संग अलीगंज के सदस्यगण बड़ी संख्या में मौजूद थे। यज्ञ डॉ.वेद प्रकाश आर्य के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ तथा आगे का कार्यक्रम श्री पाल प्रवीण द्वारा संचालित एवं संयोजित हुआ।

श्रीमती प्रमोद कुमारी ने महर्षि दयानंद से संबन्धित एक भजन सुनाया तदुपरान्त श्री पालप्रवीण ने पिताश्री प्रियपाल के जीवनादर्शों को व्याख्यायित किया। तत्कालीन केन्द्रीय मंत्री श्री कैलाशनाथ काटजू, केशवदेव मालवीय, आचार्य विद्यानन्द विदेह एवं विद्यासागर दीक्षित इत्यादि के सम्पर्कों से जुड़े हुए अनेक संस्मरण प्रस्तुत करते हुए उनकी काव्य प्रतिभा के बहुत से प्रकरणों को भी उद्‌घाटित किया गया। श्रीमती कमलेश (पुत्रवधू) तथा कुमारी देविका (पौत्री) ने विधिवत् आतिथ्य सत्कार किया। सभा में श्री सी.पी.शुक्ल, आर.एस.यादव, एस. आर.नागपाल, नवीन सहगल, सेवकराम आर्य, शिवप्रकाश गुप्त, ओमप्रकाश गुप्त, शशि रस्तोगी, ए.एन.अरोड़ा तथा श्री एस. एन.अग्रवाल की उपस्थिति महत्वपूर्ण थी। इस अवसर पर अपने विचारों को एक सवैया छंद में संजोते हुए डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने अपने भावसुमन अर्पित किये-

हँसता है प्रभात प्रमोद भरा,
नैराश्य की कालिमा धो रहा है;
आचार्य विदेह के ज्ञान का दर्शन,
बीज विवेक के बो रहा है;
करुणामय दीक्षित स्नेह का सागर,
मौक्तिक माल पिरो रहा है;
प्रियपाल के सुकृत सौरभ से-
यह देश सुवासित हो रहा है।

## जन्मदिवस

०२.०९.१३, विभूति खण्ड, गोमती नगर, ओमैक्स अपार्टमेंट, फ्लैट १०१३, टावर ६, पतंजलि योग समिति के साहित्य प्रभारी श्री मदनगोपाल सिंहल के आवास पर सुपौत्री- 'आयुषी' के जन्मदिवस के अवसर पर वैदिक यज्ञ डॉ.वेद प्रकाश आर्य के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आयुषी के माता-पिता श्रीमती शिल्पी, श्री अमित सिंहल तथा श्री विकास सिंहल एवं श्रीमती कविता सिंहल (ताऊ-ताई) यजमान तथा अध्वर्यु के आसनों पर विराजमान हुए। पतंजलि योग समिति पूर्व के अध्यक्ष श्री पीयूष कान्त, जवाहरलाल शाह, नरेश दीक्षित, अलोपीशंकर मौर्य, श्रीमती शशि दीक्षित, श्रीमती मंजू श्रीवास्तव की उपस्थिति उत्साहवर्धक थी। एपार्टमेंट के अनेक गण्यमान परिवार भी शामिल हुए और बालिका को आशीर्वाद प्रदान किया।



## अट्टहास सम्मान समारोह

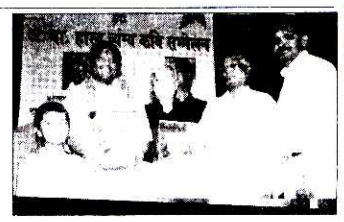

हिन्दी हास्य-व्यंग्य के शलाका पुरुष अनूप श्रीवास्तव के निर्देशन में साहित्यिक संस्था 'माध्यम' द्वारा २८.०८.२०१३ को २४वाँ 'अट्टहास सम्मान समारोह' सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

स्थानीय उमानाथ बली प्रेक्षागृह, कैसरबाग में आयोजित इस कार्यक्रम में रंगकर्मी उर्मिल कुमार थपलियाल को 'अट्टहास शिखर सम्मान' तथा व्यंग्यकार मुकुल महान को 'अट्टहास युवा सम्मान' से अलंकृत किया गया।

इस अवसर पर आयोजित कवि सम्मेलन में अंजु निगम, राधेश्याम भारती, डॉ.सुरेश, नवीन शुक्ल, राधाकृष्ण पथिक, ज्योति शेखर, सुफलता त्रिपाठी, आलोक शुक्ल, डॉ.अरुणा त्रिवेदी, पंकज प्रसून, रंजना शेखर, डॉ.रमेन्द्र त्रिपाठी, अरविन्द तिवारी ने अपनी हास्य व्यंग्य और शृंगार रस से परिपूर्ण कविताओं से श्रोताओं को रससिक्त किया। *('विनम्र')*



## 'शान-ए-अवध' सम्मान

२१ जुलाई, स्थानीय हिन्दी मीडिया सेंटर में 'कला सदन' एवं 'सुन्दरम' साहित्यिक संस्थान द्वारा संयुक्त रूप से "एक शाम-डॉ.रंगनाथ मिश्र 'सत्य' के नाम" काव्य-संध्या का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता वरिष्ठ गीतकार श्री अमृत खरे ने की। 'कला सदन' के अध्यक्ष उमेश 'राही' व 'सुन्दरम' के अध्यक्ष श्री नरेन्द्र भूषण ने डॉ.सत्य के साहित्य की समीक्षा की। डॉ.कैलाश निगम, डा.अशोक शर्मा सहित बांदा से पधारे श्री सुधीर 'कमल' आदि कवियों ने काव्य पाठ किया। श्री हरिमोहन वाजपेई 'माधव' ने धन्यवाद ज्ञापन किया। इस अवसर पर डॉ.सत्य को 'शान-ए-अवध' सम्मान से विभूषित कर सम्मान पत्र भी प्रदान किया गया। *(उमेश 'राही')*



## 'सुन्दरम' कवि सम्मेलन

साहित्यिक संस्था 'सुन्दरम' द्वारा आयोजित कवि सम्मेलन में बायें से सर्वश्री हरिप्रकाश 'हरि', संस्थाध्यक्ष नरेन्द्र भूषण, के.के.सिंह, डा.कैलाश निगम व डा.अशोक शर्मा। उक्त कवि सम्मेलन दि.१५.०९.१३ को जानकीपुरम के सुन्दरम पार्क में आयोजित हुआ। *('राही')*

संस्थापक
स्व. स्वामी आत्मबोध सरस्वती

प्रधान संपादक
डॉ0 वेद प्रकाश आर्य
'वेदाधिष्ठान' 539क/234, हरीनगर, पो0-इन्दिरानगर, लखनऊ - 226016
9450500138

संपादक (अवैतनिक)
आलोक वीर आर्य
8400038484

प्रसार व्यवस्थापक
अमित वीर त्रिपाठी
9795445800

संवाद प्रमुख
गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
9956087585

E-mail-
aryalokvarta@gmail.com

### सहयोग राशि

| | | |
|---|---|---|
| सामान्य सदस्य | - | 100 रु. वार्षिक |
| व्रती सदस्य | - | 250 रु. वार्षिक |
| ऋत्विक् सदस्य | - | 1,200 रु. वार्षिक |
| होता सदस्य | - | 2,500 रु. वार्षिक |
| संरक्षक | - | 12,000 रु. |
| प्रतिष्ठापक | - | 50,000 रु. |

सहयोग राशि 'बैंक ऑफ बड़ौदा' की किसी भी शाखा में 'आर्य्य लोक वार्ता' खाते में जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है-
खाता धारक - आर्य लोक वार्ता
खाता सं. - 00500 2000 00579
खाते का प्रकार-चालू खाता
बैंक-बैंक आफ बड़ौदा, हजरतगंज लखनऊ।

मुद्रक, स्वामी और प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश आर्य के लिए क्रियेटिव ग्राफिक्स, बी-२, हिमांशु सदन, ५-पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित तथा 'वेदाधिष्ठान' ५३९क/२३४ हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली) पो. इन्दिरानगर, लखनऊ से प्रकाशित

प्रतिष्ठापक
श्री आनन्द कुमार आर्य, कोलकाता
डॉ.(श्रीमती)वीना कटियार, फर्रुखाबाद

संरक्षक
प्रमोद कुमारी, लखनऊ
अरविन्द कुमार आर्कीटेक्ट, लखनऊ
श्रीमती शालिनी कुमार, लखनऊ
कौशल किशोर श्रीवास्तव, लखनऊ
जगदीश लाल खत्री, लखनऊ
श्रीमती कुसुम वर्मा, लखनऊ

परामर्श एवं सहयोग
श्री रघुनाथ सिंह आर्य, कानपुर
श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी', सीतापुर
डा. सत्य प्रकाश, सण्डीला, हरदोई
शिवशंकर लाल वैश्य, सीतापुर

### आवश्यक सूचना

कृपया पत्र-व्यवहार करने एवं सहयोग राशि भेजने हेतु आर्य लोक वार्ता के इन्दिरा नगर लखनऊ स्थित शिविर कार्यालय के पते का उपयोग करें-

डॉ. वेद प्रकाश आर्य,
प्रधान सम्पादक, आर्य लोक वार्ता
19/838,
प्रथम तल,
रिंगरोड,
इन्दिरा नगर,
लखनऊ-226 016

ग्राम ग्राम में नगर नगर में, 'आर्य्य लोक वार्ता' घर-घर में